हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 21 अप्रैल 2024

11 सारे काम छोड़ दो, सबसे पहले वोट दो संदेश से...

12 निबंध लेखन में कोमल और कविता पाठ में ललिता प्रथम

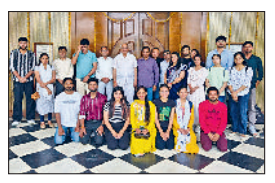

खबर संक्षेप

किसान के खेत में खड़ी बाइक चोरी

बवानीखेड़ा। गांव खेड़ी दौलतपुर के किसान का मोटरसाइकिल चोरी होने का मामला संज्ञान में आया हैं। पुलिस में दिए ब्यान में खेड़ी दौलतपुर निवासी सतीश ने बताया कि उसने अपना मोटरसाइकिल जोगेन्द्र के खेत में खड़ा किया और कंबाइन से गेहूं निकलवाने के लिए चला गया। उसका खेत पुर रोड पर सिथत है, कुछ समय बाद आकर देखा तो बाइक वहां नहीं मिली। पुलिस ने मामला दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है।

दमकोरा में 40 क्विंटल सरसों से भरी गाड़ी चोरी

लोहारू। उपमंडल के गांव दमकोरा से व्यापारी के घर के बाहर सरसों से भरी गाड़ी चोरी हो जाने का मामला प्रकाश में आया है। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। दमकोरा निवासी विजेंद्र ने पुलिस को बताया कि वह अनाज का व्यापार करता है, उसने अपनी गाड़ी को अपने घर के सामने खड़ा किया था। गाड़ी में करीब 40 क्विंटल से अधिक सरसों भरी हुई थी।

संदिग्ध परिस्थितियों में युवक की मौत

लोहारू। उपमंडल के गांव सोहांसरा में युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में जहरीला पदार्थ निगलने से मौत होने का मामला प्रकाश में आया है। मामले में लोहारू थाना पुलिस सूचना के बाद कार्रवाई कर रही है। थाना प्रभारी मदन कुमार ने बताया कि सोहांसरा निवासी करीब 22 वर्षीय युवक विष्णु की जहरीला पदार्थ निगलने से मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंच गई थी।

पैनल अधिवक्तों ने कानूनी सहायता की दी जानकारी

लोहारू। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के चेयरमैन व जिला एवं सत्र न्यायाधीश दीपक अग्रवाल के निदेर्शानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सीजेएम-कम-सचिव कपिल राठी ने शनिवार को स्थानीय न्यायिक परिसर का दौरा कर पैनल अधिवक्ताओं, मध्यस्थों और पैरा लीगल वालंटियर्स की बैठक ली।

सरकार के खिलाफ अदृश्य लहर: सिंह

भिवानी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य संदीप सिंह ने कहा कि हरियाणा में केंद्र व प्रदेश की भाजपा सरकार की विफलताओं के खिलाफ अदृश्य लहर है, क्योंकि 10 साल में मौजूदा सरकार ने न काम किया और न ही किसी वर्ग का सम्मान किया। सरकार ने प्रदेश में हर वर्ग से सरकार ने लाठी और अहंकार की भाषा में बात की। उन्होंने कहा कि कहा कि भाजपा 2014 में जो नारे देकर सत्ता में आई थी, आज ठीक इसके विपरीत काम कर रही है।

बाढ़ड़ा में गेहूं की खरीद नहीं होने पर भड़के धरतीपुत्र

किसानों ने बस स्टैंड के सामने लगाया जाम, यातायात बाधित

खरीद एजेंसी के प्रतिनिधियों को मौके पर बुलाकर गेहूं उतरवाया और जाम खुलवाया।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढ़ड़ा

बाढ़ड़ा। बस स्टैंड के सामने सड़क पर ट्रैक्टर खड़ा कर रोड जाम करते किसान व जाम लगाते किसानों को समझाने का प्रयास करते एसएचओ। फोटो : हरिभूमि

बाढ़ड़ा में गेहूं की खरीद नहीं किए जाने पर किसान भड़क गए। शनिवार को उन्होंने पूर्व मुख्य संसदीय सचिव रणसिंह मान की अगुवाई में बस स्टैंड के सामने मुख्य सड़क मार्ग पर जाम लगा दिया और सरकार व प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी कर रोष जताया, जिससे वहां करीब एक घंटे तक यातायात व्यवस्था बाधित रही। सूचना मिलने पर थाना प्रभारी ओमप्रकाश की अगुवाई में पुलिस टीम मौके पर पहुंची और किसानों को गर्म व नरम लहजें में समझाने का प्रयास किया, लेकिन किसान अपनी मांग पर अड़े रहे कि जब तक उनके गेहूं के ट्रैक्टर-ट्रॉली खाली नहीं करवाए जाएंगे वे जाम नहीं हटाएंगे। बाद में खरीद एजेंसी के प्रतिनिधियों को मौके पर बुलाकर गेहूं उतरवाया और जाम खुलवाया। करीब एक घंटे तक जाम रहने से वाहन चालकों को परेशानियों का सामना करना पड़ा। बता दें कि बाढ़ड़ा अनाजमंडी में जगह की कमी होने व सरसों भरी होने के कारण बस स्टैंड पर गेहूं उतरवाया जा रहा है। शनिवार को कई किसान गेहूं लेकर बस स्टैंड पहुंचे थे, लेकिन बस स्टैंड गेट पर ताला लगा हुआ था और छुट्टी का हवाला देकर गेहूं नहीं उतरवाया गया। काफी प्रयास के बावजूद भी किसानों का गेहूं नहीं उतरवाने और दिनभर से परेशान किसान शाम के समय भड़क गए और पूर्व मुख्य संसदीय सचिव एवं बाढ़ड़ा के पूर्व विधायक रणसिंह मान की अगुवाई में ट्रैक्टर-ट्रॉली को सड़क के बीच खड़े कर दिए।

थाना प्रभारी ने सड़क जाम करने पर कानूनी कार्रवाई की दी चेतावनी

जाम की सूचना मिलने पर थाना प्रभारी ओमप्रकाश पुलिस टीम सहित मौके पर पहुंचे और किसानों को गर्म व नरम लहजे से समझाते हुए जाम खुलवाने का प्रयास किया, लेकिन किसानों नहीं माने तो थाना प्रभारी ने सड़क जाम करने पर कानूनी कार्रवाई करने की चेतावनी दी, लेकिन किसानों ने रोष जताते हुए गेहूं उतरवाने से पहले जाम नहीं हटाने की बात कही।

चरखी दादरी जिले के किसानों को जानबूझकर किया जा रहा परेशान

पूर्व मुख्य संसदीय सचिव रणसिंह मान ने कहा कि चरखी दादरी जिले के किसानों को जान बूझकर परेशान किया जा रहा है। पूरे प्रदेश में मंडियां चल रही है और जिलेभर की मंडियों में खरीद नहीं की जा रही है। बाद में एसएचओ खरीद एजेंसी के प्रतिनिधियों को अपनी गाड़ी में बैठाकर बस स्टैंड पर लेकर आए। इसके बाद गेट खुलवाकर किसानों का गेहूं उतरवाया गया और बाद में किसानों ने जाम खोला। जाम खोलने पर पुलिस ने यातायात व्यवस्था बनाने का कार्य किया।

तोशाम। बिना पिता की बेटी की शादी के लिए परिजनों को राशि सौंपते भाईचारा कन्यादान ग्रुप के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

भाईचारा कन्यादान ग्रुप ने तीन गरीब बेटियों की शादी में की मदद

- पिछले 20 दिन में बिना पिता की बेटियों की शादी में परिवार को दिया सहयोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| तोशाम

तोशाम क्षेत्र के युवाओं की भाईचारा कन्यादान व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर गरीब कन्याओं की शादी में सहयोग करने की मुहिम दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। मुहिम के तहत युवा पिछले करीबन 20 दिन के अंदर बिना पिता की तीन बेटियों की शादी में हजारों रुपये का सहयोग कर चुके हैं। शनिवार को युवाओं ने अन्य लोगों की मदद से गांव भुरटाना में बिना पिता की बेटी की शादी में 21 हजार रुपये की मदद की, ये राशि युवाओं ने बिना पिता की बेटी के घर जाकर उसकी मां को कन्यादान के रूप में सौंपी। उल्लेखनीय है कि कुछ युवाओं ने गत एक अप्रैल को पहल कर व्हाट्सएप पर भाईचारा कन्यादान ग्रुप बनाया था, इस ग्रुप के माध्यम से उन्होंने अन्य लोगों से कन्यादान के रूप में सहयोग करने की मांग की थी, जिसके तहत युवाओं ने ग्रुप के माध्यम से कन्यादान एकत्रित कर गांव अलखपुरा में सात अप्रैल को बिना पिता की बेटी की शादी में 89000 रुपये की कन्यादान के रूप में मदद की थी।

तत्पश्चात उन्होंने 17 अप्रैल को प्रजापति समाज की तोशाम के राजीव नगर में वार्ड नंबर सात निवासी गरीब परिवार की लड़की की शादी मे 51000 रुपये का कन्यादान राशि के रूप में सहयोग किया। इस मौके पर ग्रुप के सदस्य बिल्लू बागनवाला, कुलदीप अलखपुरा, पूर्व सरपंच भूपेन्द्र सिंह, सरपंच अभय सिंह अलखपुरा, जय भगवान जांगडा भुरटाना, मन्दीप कंवल भुरटाना आदि मौजूद थे।

बाल श्रम व बाल विवाह के प्रति किया जागरूक

भिवानी। रिवाड़ीखेड़ा के आंगनबाड़ी केंद्र में मीटिंग में बाल विवाह, बाल मजदूरी, शिक्षा छोड़ने जैसे अहम मुद्दों पर चर्चा हुई। मीटिंग में बतौर मुख्यतिथि इंडियन वेटरन ऑर्गेनाइजेशन की महिला विंग की अध्यक्ष निर्मला परमार ने शिरकत की। कार्यक्रम में आंगनबाड़ी वर्कर सुनीता, कमलेश, राजेश, निर्मला, हेल्पर माया, राजेश, स्वास्थ्यकर्मी माया मौजूद रही। मुख्यतिथि ने महिलाओं को बाल विवाह व बाल मजदूरी पर प्रतिबंध लगाने वाले कानूनी की जानकारी दी। सर्कल सुपरवाइजर सविता ने उपस्थित सभी को बाल विवाह व बाल श्रम रोकने की शपथ दिलवाई।

विद्यालयों में छात्र संख्या बढ़ाने को किया प्रेरित

- बीपीआईयू बैठक में मेंटर्स ने विजिट पूरी करने के लिए किया प्रेरित
- 23 से जेबीटी शिक्षकों की शुरू होगी ट्रेनिंग : जिला समन्वयक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा के वीर शहीद गुलाब सिंह पीएमश्री राजकीय कन्या वमा विद्यालय में हुई बीपीआईयू की बैठक। फोटो : हरिभूमि

बवानीखेड़ा के वीर शहीद गुलाब सिंह पीएमश्री राजकीय कन्या वमा विद्यालय में बीपीआईयू बैठक का आयोजन किया, जिसमें एफएलएन जिला समन्वयक ललित कुमार, संपर्क जिला समन्वयक मनीष कुमार ने शिरकत की।

कार्यक्रम कार्यकारी खंड शिक्षा अधिकारी आनंद कुमार शर्मा के नेतृत्व में हुआ, जिसमें मुख्यतः सभी कलस्टरों के सीआरसी में संतोष भाकर, सुरेश यादव, महेश, शिक्षक अनिल, सुनील, एबीआरसी, बीआरपी उपस्थिति रहे। बैठक में जिला समन्वयक ललित ने बताया कि सभी सीआरसी, एबीआरसी, बीआरपी को अपनी विजिट पूर्ण करके उन्हें ऑनलाइन करना है। विद्यालयों में बाल वाटिका में छात्र संख्या में बढ़ोतरी हुई है, इसी प्रकार अन्य कक्षाओं में भी छात्र संख्या में हिजाफा करने पर बल देना है। उन्होंने बताया कि किसी भी विद्यालय स्टाफ ने किसी भी छात्र के दाखिले को लेकर मनाही नहीं करनी है, वहीं विद्यालयों में पुस्तकों की कमी होने पर भी साथ के विद्यालयों से लेने या लिस्ट बनाकर अधिकारी करें सूचित करने के बारे में प्रेरित किया।

उन्होंने बताया कि 23 अप्रैल से जेबीटी शिक्षकों के लिए कैंप का आयोजन किया जाएगा, जिनमें पुरूष शिक्षकों की ट्रेनिंग पहले करवाई जाएगी, ताकि चुनावों में ड्यूटी की जा सके।

मशीन में आने से श्रमिक की दर्दनाक मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढ़ड़ा

बाढ़ड़ा। सिविल अस्पताल में पोस्टमार्टम का इंतजार करते परिजन।

गांव डालावास में गेहूं निकालते समय मशीन में आने से श्रमिक की दर्दनाक मौत हो गई। सूचना मिलने पर बाढ़ड़ा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और श्रमिक के शव को मशीन से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए चरखी दादरी के सिविल अस्पताल पहुंचाया, जहां शव का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंपा गया।

गांव डालावास निवासी करीब 33 वर्षीय बिजेंद्र मेहनत मजदूरी कर अपने तीन बच्चों सहित परिवार का पालन पोषण करता था। बीती रात को गांव डालावास निवासी किसान के खेत में गेहूं निकलवाने के लिए बिजेंद्र मजदूरी पर गया था। इसी दौरान वह हादसे का शिकार हो गया और हड़म्बा मशीन में आने के कारण उसकी दर्दनाक मौत हो गई। मशीन के अंदर श्रमिक बिजेंद्र का पैरो से ऊपर का पूरा हिस्सा मशीन में कट गया है।

घटना की जानकारी रात को पुलिस को दी गई, जिसके बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल के शवगृह में रखवाया गया। शनिवार को सिविल अस्पताल पहुंचे मृतक के भाई अनूप व उसके साथी ने बताया कि उन्हें बताया गया कि गेहूं निकालते समय हाथ फिसलने से बिजेंद्र मशीन के अंदर आ गया है।

मृतक बिजेंद्र का फाइल फोटो

- गांव डालावास में हुआ हादसा, पुलिस कार्रवाई में जुटी

होनहार विद्यार्थियों को किया सम्मानित

- विद्यार्थियों की मेहनत एवं लग्न तय करती देश का भविष्य : सचिन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। बच्चों को सम्मानित करते हमारा अपना फाउंडेशन के सचिन वर्धमान।

विद्यार्थियों के मजबूत कंधों पर देश का भविष्य टिका होता है, क्योंकि विद्यार्थियों की मेहनत एवं लग्न देश का स्वर्णिम भविष्य तय करती है, इसीलिए विद्यार्थियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करना बहुत जरूरी है, ताकि उनकी प्रतिभा को निखारा जा सकें।

इसी सोच के साथ हमारा अपना फाउंडेशन द्वारा विशेष अभियान चलाया हुआ है, जिसके तहत विभिन्न स्कूलों के अव्वल विद्यार्थियों को उनके विद्यालय में सम्मानित किया जाता है। इसी कड़ी में फाउंडेशन के संस्थापक सचिन वर्धमान के नेतृत्व में कोर कमेटी अध्यक्ष आरपी ओला, शिक्षा प्रकोष्ठ सलाहकार अशोक शर्मा आदि ने राजकीय वमा विद्यालय रतेरा, राजकीय प्राथमिक पाठशाला रतेरा, मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला यादव ढ़ाणी, मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला, मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला ढुंढ़वा जोहड़, मॉडल संस्कृति प्राथमिक कन्या पाठशाला बवानीखेड़ा, मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला बवानीखेड़ा में जाकर प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर पाने प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

भिवानी। प्राचार्या व शिक्षिकाओं के साथ पदक विजेता कशिश। फोटो : हरिभूमि

कशिश ने जीता रजत पदक

भिवानी। मिताथल में हुई पहली जूनियर जिला बॉक्सिंग चैंपियनशिप में केएम पब्लिक स्कूल की कक्षा बारहवीं की छात्रा कशिश मलिक ने द्वितीय स्थान जीतकर रजत पदक हासिल किया। छात्रा कशिश ने न केवल परिवार, विद्यालय बल्कि पूरे जिले का नाम रोशन किया हैं और उनका नाम राज्यस्तर की प्रतियोगिता के लिए चयनित किया गया है। विद्यालय प्राचार्या रेनू सैनी, उपप्राचार्या नीलम गौतम, प्रबंधन समिति सदस्य अमिता शर्मा ने कशिश को प्रार्थना सभा में मेडल पहनाकर सम्मानित किया। विद्यालय प्रबंधन समिति अध्यक्ष मनीष सिंघानिया, सचिव राजेश मोडा, प्रबंधक आनंद बासिया तथा समिति सदस्य जितेंद्र गोयल ने वर्चुअल माध्यम से छात्रा को उपलब्धि के लिए बधाई दी। गतिविधि प्रभारी सारिका पंडित, पीटीआई सुनीता नेहरा, आरती शर्मा, आकाश व सभी अध्यापकों ने कशिश को शुभकामनाएं दी।

जनस्वास्थ्य विभाग ने हनुमान ढाणी व ढाणी चरखान में लगाया खुला दरबार

पेयजल की बर्बादी करने वालों पर विभाग लगाएगा जुर्माना

- जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग ने वार्ड 15 व 16 के लोगों की सुनीं समस्याएं
- अधिकारियों ने लोगों से पानी को बर्बाद नहीं करने का किया आह्वान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। खुला दरबार में जनसमस्याएं सुनते अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

डीसी नरेश नरवाल के आदेशानुसार जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों ने शनिवार को वार्ड 15 के लिए हनुमान ढ़ाणी चौक व 16 के लिए ढ़ाणी चरखान में जनता दरबार लगाया। नागरिकों ने क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में पेयजल आपूर्ति करने व ब्लॉक सीवरेज लाइनों को खुलवाने की मांग रखी। विभाग के अधिकारियों ने नागरिकों से अपील की कि वे पेयजल को बर्बाद न करें, पानी को व्यर्थ बहाने वालों को नोटिस देकर जुर्माना लगाने की चेतावनी दी गई तथा अवैध कनेक्शन काटने की भी बात कही।

खुले दरबार में विभाग के एसडीओ सतीशचंद्र, जेई दीपक, संजय जैन व उमेद सिंह ने जनसमस्याएं सुनी। उल्लेखनीय है कि गर्मी के मौसम के चलते डीसी नरवाल ने जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि शहर में नागरिकों के समक्ष पेयजल की समस्या नहीं बननी चाहिए, डीसी के निर्देशानुसार जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों ने शनिवार को वार्ड 15 के लिए हनुमान ढाणी चौक व 16 के लिए ढाणी चरखान में जनता दरबार लगाया। नागरिकों ने अधिकारियों से पर्याप्त एवं स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने की मांग की। नागरिकों ने अधिकारियों को बताया कि उनके क्षेत्र में पर्याप्त पेयजल नहीं मिल रहा, सीवरेज लाइन भी जगह जगह से ब्लॉकेज है, इससे सीवर ओवरफ्लो हो जाते हैं और लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

नलों को खुला न छोड़ें, पानी बर्बादी रोकें

विभाग के अधिकारियों ने लोगों से कहा कि नलों को खुला न छोड़ें, पानी की बर्बादी को रोकें, पानी को व्यर्थ बहाने वालों को नोटिस जारी कर जुर्माना लगाने की बात कही। उन्होंने लोगों से कहा कि पानी के वैध कनेक्शन होने चाहिए, जितने भी अवैध कनेक्शन हैं, वे काटे जाएंगे ताकि लोगों को पर्याप्त मात्रा में पेयजल मिल सके और जहां-जहां सीवरेज लाइन ब्लॉक हैं, उन्हें दुरुस्त करवाया जाएगा। इसके साथ ही लोगों से सीवरेज लाइन में गोबर या कचरा न डालने की अपील की।

अधिकारियों से करें संपर्क तुरंत होगा समाधान

अधिकारियों ने नागरिकों को आश्वासन दिया कि पेयजल या सीवरेज संबंधित कोई परेशानी बनती है तो विभाग के अधिकारियों से संपर्क करें, तुरंत प्रभाव से समस्या का समाधान करवाया जाएगा तथा लोगों के समक्ष परेशानी नहीं आने दी जाएगी। वहीं जिला सलाहकार अशोक भाटी ने जल संरक्षण की अपील की। इस दौरान संबंधित वार्डों के पार्षद, गणमान्य नागरिक व महिलाएं मौजूद रही।

गजब की रहेगी सोने की चाल कर सकता है खूब मालामाल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

तीन महीने में 15% की छलांग, निवेशकों की जमकर कमाई

पिछले कुछ समय में सोना सबसे बढ़िया एसेट क्लास के तौर पर उभरा है। तीन महीने में इस पीली धातु की कीमतें 15 फीसदी तक बढ़ी हैं। यही, नहीं आरबीआई सहित कई उभरते देशों के केंद्रीय बैंक सोने की खरीद में जुटे हैं। सोने को सबसे सुरक्षित निवेश विकल्प के तौर पर माना जाता है। इसमें निवेश कर आप भी मलामाल हो सकते हैं। वैसे भी विशलेषक और सर्राफा बाजार के जानकार इसे निवेश के लिए बढ़िया बता रहे हैं।

जैसे जैसे सोना चमकमता जा रहा है यह निवेशकों को भी खूब भा रहा है। विशलेषकों और सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि इस साल सोना बढ़िया कमाई करवा सकता है। इसकी चाल तेज रहेगी। यह निवेशकों पर खूब पैसे बरसा सकता है। ऐसे में सोने में निवेश आपकी संपत्ति को बढ़ाने में सहायक होगा। वैसे भी निवेशक फर्मों का कहना है कि आपके पोर्टफोलियों में कम से कम 20 फीसदी गोल्ड होना ही चाहिए। यह आपको हर स्थिति से उभारने में मदद कर सकता है। पिछले तीन महीनों में सोना 15% से ज्यादा बढ़ा है। 2024 की शुरुआत से यह सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले एसेट क्लास के तौर पर उभरा है। पिछले तीन महीनों में कई बातों के चलते पीली धातु के दाम ऊपर गए हैं। क्या चमकीली धातु में यह तेजी आगे भी जारी रहेगी? निवेशकों को क्या करना चाहिए? इस रिपोर्ट के जरिये हम आपको देंगे ऐसी ही जानकारी की क्या ईरान-इजराइल टेंशन के बीच सोने में निवेश का सही समय है। आप किस तरह से सोने में निवेश का बढ़िया रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे ही तमाम सवालों के जवाब इस रिपोर्ट में आपको मिलेंगे।

कई देशों के बैंक खरीद रहे सोना

इस समय भारत और चीन सहित उभरते देशों के केंद्रीय बैंक बीते कुछ महीनों से लगातार सोने की खरीद में जुटे हुए हैं। इसने सोने की कीमतों को मजबूती दी है। सोना पोर्टफोलियो में विविधता लाने और महंगाई से बचाव के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है। इसे सबसे सुरक्षित निवेश विकल्प माना जाता है। इसलिए आप भी इसमें लंबी अवधी के लिए निवेश कर सकते हैं और बुढ़ापे के लिए अच्छा पैसा बचा सकते हैं।

मुश्किल समय में बढ़ते हैं दाम

युद्ध, राजनीतिक अस्थिरता और प्राकृतिक आपदाएं जैसी वैश्विक घटनाओं पर सोने की कीमतों पर असर पड़ता है। मुश्किल समय में सोने की कीमतों में अक्सर बढ़त देखने को मिलती है। जब अर्थव्यवस्था अनिश्चित होती है तो भी सोने की कीमतें आमतौर पर बढ़ जाती हैं। कारण है कि इसे सुरक्षित विकल्प माना जाता है।

निवेशकों को क्या करना चाहिए

बीते कुछ समय में सोने में निवेश करने वालों के पास मुस्कुराने का कारण रहा है। पिछले तीन महीनों में पीली धातु में 15% से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। यह कैलेंडर वर्ष में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले एसेट क्लास में उभरी है। विश्लेषकों को उम्मीद है कि सोने में और तेजी आएगी। कारण है कि कीमती धातु को रफ्तार देने वाले कई फैक्टर पॉजिटिव हैं। इनमें ऊंची महंगाई दर, प्रमुख केंद्रीय बैंकों की ओर से मौद्रिक नीति में नरमी की संभावनाएं और मध्य पूर्व और यूक्रेन में भू-राजनीतिक तनाव शामिल हैं।

सोने में निवेश के तरीके

फिजिकल गोल्ड

सोने की सलाखें और सिक्के: यह सोने में निवेश करने का सबसे पारंपरिक तरीका है। आप अलग-अलग आकारों और शुद्धता स्तरों में सोने की सलाखें और सिक्के खरीद सकते हैं।

सोने की जूलरी: आप सोने की जूलरी में भी निवेश कर सकते हैं, जैसे कि हार, कंगन और अंगूठियां। हालांकि, ध्यान रखें कि जूलरी में सोने की शुद्धता कम होती है और इसका मूल्य निवेश उद्देश्यों के लिए सोने की तुलना में कम होता है।

पेपर गोल्ड

सोने में निवेश करने वाले म्यूचुअल फंड: ये म्यूचुअल फंड सोने की सलाखों और सिक्कों में निवेश करते हैं। यह उन लोगों के लिए एक अच्छा विकल्प है जो भौतिक सोने को स्टोर करने और उसका बीमा करने की परेशानी से बचना चाहते हैं।

गोल्ड एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड (ईटीएफ): ये ईटीएफ सोने की कीमतों को ट्रैक करते हैं और आपको सोने की सलाखों या सिक्कों के बिना सोने में निवेश करने की अनुमति देते हैं।

गोल्ड फ्यूचर एंड ऑप्शन: ये अनुबंध आपको भविष्य में सोने की एक निश्चित कीमत पर खरीदने या बेचने का अधिकार देते हैं।

डिजिटल गोल्ड

सोने में निवेश करने वाले ऐप्स: कई ऐप्स आपको अपने स्मार्टफोन के जरिये सोने में निवेश करने की अनुमति देती हैं। आप छोटी मात्रा में भी सोना खरीद सकते हैं और इसे आसानी से बेच सकते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी: *कुछ क्रिप्टोकरेंसी जैसे कि पाई (पीआई) और डीजीएक्स (डीजीएक्स) सोने से समर्थित हैं। सोने में निवेश करने का सबसे अच्छा तरीका आपकी व्यक्तिगत परिस्थितियों और वित्तीय लक्ष्यों पर निर्भर करता है। निवेश करने से पहले आपको अपनी रिसर्च करनी चाहिए और विभिन्न विकल्पों की तुलना करनी चाहिए।*

डीएसपी म्यूचुअल फंड की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अगली कुछ तिमाहियों में सोना, चांदी और अन्य कीमती धातुओं में तेजी बनी रह सकती है। एक्सपर्ट्स का कहना है कि सोना अच्छी स्थिति में है। अगर महंगाई की दर ऊंची रहती है तो इसमें बढ़ोतरी होगी। कीमतें कम हो जाती हैं और ब्याज दरों में कटौती होती है तो भी सोना अच्छा प्रदर्शन करेगा। कारण है कि जियो-पॉलिटिकल टेंशन सोने की कीमतों को हवा दे रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध खत्म नहीं हुआ। इस बीच ईरान और इजरायल के बीच भी तनाव बढ़ गया है। इनसे सोने की कीमतों को बल मिलेगा।

टैक्स कैसे लगता है

मल्टी-कैप फंड्स पर इक्विटी फंड्स की तरह टैक्स लगता है। उनके ऊपर पूंजीगत लाभ के हिसाब से टैक्स लगता है। एक साल से कम समय के लिए रखे गए फंड से हुई कमाई पर 15% टैक्स लगाया जाता है, और एक साल से ज्यादा समय तक रखे गए फंड से हुई कमाई के मामले में 1 लाख रुपये से अधिक के लाभ पर 10% टैक्स लगाया जाता है। इसका मतलब है कि हर साल 1 लाख रुपये तक का लाभ छूट प्राप्त है। टैक्स की गणना 1 लाख रुपये से ज्यादा की रकम के हिसाब से की जाती है।

मल्टी-कैप फंड्स ने 1 साल में दिया 52% का रिटर्न, एसआईपी से जुटा सकते हैं मोटा फंड

सुझाव
बिजनेस डेस्क

मल्टी-कैप एक प्रकार का इक्विटी म्यूचुअल फंड है, यह लार्ज, मिड और स्मॉल-कैप कंपनियों में करता है निवेश, मल्टी-कैप फंड में लार्ज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप तीनों में 25-25% हिस्सा रखना होगा

मल्टी-कैप म्यूचुअल फंड एक प्रकार का इक्विटी म्यूचुअल फंड है, जो लार्ज, मिड और स्मॉल-कैप कंपनियों समेत अलग-अलग बाजार पूंजीकरण वाले शेयरों के विविध पोर्टफोलियो में निवेश करता है। बाजार पूंजीकरण से किसी कंपनी के आकार और उसके मूल्य का पता चलता है। अगर आप कम जोखिम के साथ किसी ऐसी स्कीम में निवेश करना चाहते हैं जहां आपको एफडी से ज्यादा रिटर्न मिले तो आप म्यूचुअल फंड की मल्टी-कैप स्कीम्स ने निवेश कर सकते हैं। इस कैटेगरी में एसआईपीके जरिये निवेश कर मोटा फंड बनाया जा सकता है। इस कैटेगिरी के फंड्स ने बीते 1 साल में 52% तक का रिटर्न दिया है। सेबी के नए नियमों के अनुसार मल्टी-कैप फंड में लार्ज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप तीनों में 25-25% हिस्सा रखना होगा। फंड मैनेजर को न्यूनतम 75% इक्विटी और इक्विटी ओरिएंटेड फंड में निवेश रखना होगा।

मल्टी कैप फंड के प्रकार

लार्ज-कैप फोकस्ड फंड : ये इक्विटी फंड लार्ज-कैप फंडों में अधिक निवेश करते हैं, जबकि बाकी संपत्तियां मिड और स्मॉल-कैप शेयरों में निवेश की जाती हैं। चूंकि वे लार्ज-कैप शेयरों की ओर अधिक झुकाव रखते हैं, इस कारण वे तुलनात्मक तौर पर कम वृद्धि करा सकते हैं।

मिड-कैप या स्मॉल-कैप फोकस्ड फंड: ये इक्विटी फंड मिड और स्मॉल-कैप शेयरों को अधिक वेटेज देते हैं, जबकि बाकी का निवेश लार्ज-कैप शेयरों में किया जाता है। इस कारण वे पूंजी को बढ़ाने की ज्यादा संभावना के साथ ज्यादा जोखिम वाले हो सकते हैं।

इसे ऐसे समझें

मान लीजिए फंड मैनेजर के पास निवेशकों का कुल 100 रुपये हैं। यहां फंड मैनेजर को न्यूनतम 75 रुपये इक्विटी और इक्विटी ओरिएंटेड फंड में निवेश करना होगा। जिसमें 25-25 रुपये लार्ज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप तीनों में लगाना होगा। बाकी बचे हुए 25 रुपये फंड मैनेजर अपने हिसाब से निवेश कर सकते हैं।

इनमें रहता है कम जोखिम

यदि आप इक्विटी फंड्स में इन्वेस्ट करना चाहते हैं, लेकिन ज्यादा-रिस्की एक्सपोजर लेना नहीं चाहते, तो आप टॉप-रेटेड मल्टी-कैप फंड्स में इन्वेस्ट कर सकते हैं। मार्केट कैपिटलाइजेशन के हिसाब से ये फंड्स अच्छी तरह डाइवर्सिफाइड भी होते हैं। ये फंड्स, मार्केट के स्थिर रहने पर, स्मॉल और मिड-कैप फंड्स की तुलना में कम रिटर्न दे सकते हैं लेकिन अस्थिर मार्केट कंडीशन में ये फंड्स कम रिस्की होते हैं। इसलिए, यदि आप एक ऐसा फंड चाहते हैं जिसमें कम रिस्क हो तो आप मल्टी-कैप फंड्स आपके लिए सही इन्वेस्टमेंट चॉइस हो सकता है।

किसे निवेश करना चाहिए

निवेशक जो इक्विटी में निवेश करना चाहते हैं, लेकिन बहुत अधिक जोखिम नहीं लेना चाहते हैं, इन फंड्स में निवेश कर सकते हैं। पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाइ करने का ये अच्छा ऑप्शन है। जो निवेशक एक ही पोर्टफोलियो में जोखिम और अस्थिरता के बीच संतुलन बनाना चाहते हैं, वे भी मल्टी-कैप फंड्स का विकल्प चुन सकते हैं।

एसआईपी के जरिए निवेश करना रहेगा सही

म्यूचुअल फंड में एक साथ पैसा लगाने की बजाय सिस्टमेंटिक इनवेस्टमेंट प्लान यानी एसआईपी के जरिए निवेश करना चाहिए। एसआईपी के जरिए आप हर महीने एक निश्चित अमाउंट इसमें लगाते हैं। इससे रिस्क और कम हो जाता है क्योंकि इससे इस पर बाजार के उतार चढ़ाव का ज्यादा असर नहीं पड़ता। इसके अलावा एसआईपी के जरिए आप आसानी से बड़ा फंड भी तैयार कर सकेंगे।

- ईएलएसएस स्कीम में मिलता है टैक्स बेनिफिट भी
- कई टॉप इक्विटी लिंक्ड सेविंग्स स्कीम्स टॉप पर रही
- ईएलएसएस भी निवेश का अच्छा विकल्प हो रहे

ईएलएसएस फंडों ने 5 वर्ष में 34% तक रिटर्न दिया

फैक्ट
बिजनेस डेस्क

पेश की कई टॉप इक्विटी लिंक्ड सेविंग्स स्कीम (ईएलएसएस) ने पिछले 5 से 10 साल के दौरान शानदार रिटर्न दिए हैं। इनमें से कुछ फंड्स का औसत सालाना रिटर्न तो करीब 25 से 34% तक रहा है। इतना ही नहीं, ईएलएसएस पर मिलने वाला टैक्स बेनिफिट इनमें निवेश को और भी आकर्षक बना देता है। इसलिए इसमें निवेश करना फायदे का सौदा है। आप भी ईएलएसएस में निवेश कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। ईएलएसएस ऐसे म्यूचुअल फंड्स हैं, जिनमें मुख्यतौर पर इक्विटी में निवेश किया जाता है। इस समय इक्विटी निवेशकों की पहली पसंद बनी बना हुआ है। चूंकि इसमे निवेश कर लोग अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं।

ईएलएसएस पर क्या हैं टैक्स बेनिफिट

टैक्स सेविंग इनवेस्टमेंट के लिहाज से इक्विटी लिंक्ड सेविंग्स स्कीम (ईएलएसएस) निवेश का अच्छा विकल्प हो सकते हैं। टैक्स सेविंग ईएलएसएस में हर साल 1.5 लाख रुपये तक लगाने पर सेक्शन 80सी के तहत टैक्स छूट मिलती है। इस इनवेस्टमेंट को कम से कम 3 साल तक बनाए रखने के बाद निकाला जाए, तो एक फाइनेंशियल इयर के दौरान 1 लाख रुपये तक का प्रॉफिट लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन (एलटीसीजी) माना जाता है, जिस पर टैक्स नहीं लगता। मुनाफा 1 लाख रुपये से ज्यादा होने पर भी टैक्स पेयर के स्लैब की बजाय 10% की दर से एलटीसीजी टैक्स देना होता है। अच्छी बात यह है कि ईएलएसएस में सिर्फ टैक्स बचाने के लिए ही नहीं, बेहतर रिटर्न के लिए भी निवेश किया जा सकता है, जिसकी गवाही आंकड़े देते हैं।

क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 34.79%
- 5 साल में रिटर्न : 34.36%
- 10 साल में रिटर्न: 27.28%

एसबीआई लॉन्ग टर्म इक्विटी फंड

- 3 साल में रिटर्न : 27.21%
- 5 साल में रिटर्न : 22.66%
- 10 साल में रिटर्न : 18.11%

एयूएम : 21,754.29 करोड़ रुपये

एचडीएफसी ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 26.30%
- 5 साल में रिटर्न: 19.28%
- 10 साल में रिटर्न: 16.81%

एयूएम : 14,140.23 करोड़ रुपये

बैंक ऑफ इंडिया ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न: 25.37%
- 5 साल में रिटर्न: 27.00%
- 10 साल में रिटर्न: 20.55%
- एयमएम : 1,181.57 करोड़ रुपये

बंधन ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 23.43%
- 5 साल में रिटर्न: 22.06%
- 10 साल में रिटर्न:19.89%

एयूएम : 6,234.18 करोड़ रुपये

डीएसपी ईएलएसएस टक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 21.36%
- 5 साल में रिटर्न: 21.40%
- 10 साल में रिटर्न: 19.76%
- एयूएम : 14,336.52 करोड़ रुपये

कोटक ईएलएसएस टक्स सेवर फंड

- 3 साल में रिटर्न : 21.15%
- 5 साल में रिटर्न: 20.85%
- 10 साल में रिटर्न: 19.50%
- एयूएम : 5,191.71 करोड़ रुपये

लंबे निवेश का बेहतर विकल्प

आंकड़ों से साफ है कि ईएलएसएस में निवेश से न सिर्फ टैक्स का बेनिफिट मिलता है, बल्कि लंबे अरसे में वेल्थ क्रिएशन के लिए भी ये अच्छा विकल्प साबित हो सकते हैं। इसलिए ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड लंबे समय तक निवेश करने पर अच्छा रिटर्न मिल सकता है। हालांकि निवेश का फैसला करने से पहले यह बात जरूर ध्यान में रखनी चाहिए कि इक्विटी लिंक्ड स्कीम होने के कारण इसमें बाजार से जुड़ा रिस्क हमेशा बना रहता है। लिहाजा निवेश का फैसला अपने रिस्क प्रोफाइल को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए। हालांकि अगर आप इसमें सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश करेंगे, तो एवरेजिंग के कारण रिस्क कम रहेगा।

क्या हैं ईएलएसएस फंड

ईएलएसएस फंड एक इक्विटी म्यूचुअल फंड है जो आपको अपने पैसे को स्टॉक में इन्वेस्ट करने की अनुमति देता है। हालांकि, इसका मतलब हमेशा नहीं है कि आपके पैसे का 100% इक्विटी मार्केट में इन्वेस्ट किया जाएगा। ईएलएसएस फंड, बिना किसी अधिक जोखिम के स्टॉक मार्केट से लाभ उठाने के सबसे अच्छे तरीकों में से एक है। ईएलएसएस फंड का सबसे अच्छा हिस्सा यह है कि वे आपको इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80सी में उल्लिखित प्रावधानों के तहत टैक्स बचाने की अनुमति देते हैं। ईएलएसएस फंड में इन्वेस्ट करके अपनी वार्षिक टैक्सेबल इनकम से रु. 1,50,000 तक की टैक्स छूट का लाभ उठा सकते हैं। टैक्स लाभ को देने के लिए, ईएलएसएस म्यूचुअल फंड में तीन वर्ष की लॉक-इन अवधि होती है। यह समय परक्राम्य नहीं है, और तीन वर्ष से पहले अपने पैसे निकालने का कोई तरीका नहीं है।

पर्सनल लोन से निपटा सकते हैं कई खर्च, लेकिन रहें अलर्ट

- कई आर्थिक मुसीबतों से बचा सकता है पर्सनल लोन
- सभी तरह की व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने में सक्षम

बिजनेस डेस्क

पर्सनल लोन वह अनसिक्योर्ड क्रेडिट होता है जो कोई बैंक या नॉन बैंकिंग फाइनेंशियल कंपनी देती है, ये आपकी क्रेडिट हिस्ट्री और आपकी पर्सनल इनकम के आधार पर लोन चुकाने की क्षमता के आधार पर मिलता है। ये कस्टमर लोन के तौर पर भी जाने जाते हैं, ये एक ऑल पर्पज लोन है जो आपकी सभी तरह की व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने के लिए लिया जाता है। इक्वेटेड मंथली इंस्टॉलमेंट्स (ईएमआई) लोन चुकाने का माध्यम होती हैं और ये लोन के प्रिंसिपल अमाउंट और लोन के ब्याज को धीरे-धीरे मासिक आधार पर चुकाने का काम करती हैं जब तक लोन पूरी तरह चुकता नहीं हो जाता है। हर ईएमआई में प्रिंसिपल लोन अमाउंट और ब्याज जो चुकाया जाना है उसका कंपोनेंट होता है। चूंकि इस लोन को लेने में कम पेपर वर्क होता है और प्रोसेसिंग में भी कम समय लगता है तो बस आपके पास अच्छा क्रेडिट स्कोर होना चाहिए और आपको ऊंची ब्याज दर चुकाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

पर्सनल लोन ईएमआई कैलकुलेटर क्या है

पर्सनल लोन वो अनसिक्योर्ड लोन होते हैं जो कि किसी व्यक्ति को दिए जाते हैं। जो कोई अपनी आर्थिक जरूरतों को हासिल करना चाहते हैं जैसे कि कर्ज को उतारना, शादी-विवाह आदि के लिए खर्च, अचानक आने वाले मेडिकल खर्च के लिए और अन्य किसी जरूरत के लिए पैसा चाहते हैं, वो पर्सनल लोन लेते हैं। पर्सनल लोन ईएमआई कैलकुलेटर के जरिए आपको होम लोन की इंस्टॉलमेंट्स का पता चल जाता है जो आपको रेगुलर इंटरवल पर देनी होगी। ये आपको होम लोन प्लान लेने में एक बेहद जरूरी फाइनेंशियल प्लानिंग टूल के रूप में काम आता है और आप अपना निर्णय ले पाते हैं।

ईएमआई कैलकुलेशन कैस मदद हो पाती है

ईएमआई कैलकुलेशन आपको स्पष्ट रकम के बारे में बताता है कि हर महीने आपको कितनी रकम होम लोन चुकाने में देनी होगी, जिससे आप एक सही फैसला ले सकते हैं कि लोन लेना आपको बजट में है या नहीं। ये आपको लोन की कॉस्ट से जुड़ी अन्य बातों के बारे में भी बताता है, जिससे आप जान पाते हैं कि पर्सनल लोन लेने के बाद आपको हर महीने कितनी रकम अलग निकालकर रखनी होगी और आप लोन लेने की स्थिति में है या नहीं।

ईएमआई जांचने के फायदे

- लोन लेने की क्षमता जांच सकते हैं।
- लोन का कुल अमाउंट और टेन्योर जांच सकते हैं।
- लोन रीपेमेंट की योजना बना सकते हैं।
- प्रीपेमेंट की योजना बना सकते हैं।
- पर्सनल लोन लेने के क्या कारण हो सकते हैं।
- महंगी शादी के लिए लिया जा सकता है।
- किसी बड़ी खरीदारी के लिए हो सकता है।
- मेडिकल इमरजेंसी के लिए।
- घर की मरम्मत या सुधार के लिए।
- क्रेडिट कार्ड के कर्ज को चुकाने के लिए।
- किसी बिजनेस को फाइनेंस करने या किसी निवेश को करने के लिए लिया जा सकता है।

तैयारी बच्चे भी टैक्स बचाने में कर सकते हैं मदद, ऐसे समझें गणित

टैक्स बेनिफिट फायदा उठाकर वित्तीय बोझ कर सकते हैं कम

बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए ज्यादा से ज्यादा टैक्स बचाएं

जानकारी
बिजनेस डेस्क

टैक्स बचाने के लिए नौकरी पेशा लोग तमाम जतन करते हैं। बच्चों के भविष्य के लिए बचत भी बेहद जरूरी है। ऐसे में बच्चे भी टैक्स बचत करवाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। माता-पिता बनने के बाद तमाम जिम्मेदारियों और खुशियों के बीच अक्सर इस पहलू को नजरअंदाज कर दिया जाता है कि बच्चों के कारण परिवार को टैक्स में छूट मिलता है। परिवार में बच्चों की मौजूदगी और उनकी परवरिश से मिल रही खुशी के इतर सरकार द्वारा भी पैरेंट्स को वित्तीय सपोर्ट मिलती है ताकि माता-पिता को बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल, शिक्षा पर होने खर्चों और उनकी जरूरतों को पूरा करने में कम परेशानी हो। छोटे बच्चों के कारण पेरेंट्स को मिलने वाले टैक्स बेनिफिट के बारे में समझाकर और उनका ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाकर परिवार के वित्तीय बोझ को काफी हद तक कम किया सकता हैं। इसके साथ ही बच्चों को बेहतर भविष्य दिया जा सकत हैं। परिवार का टैक्स बचाने में आपके बच्चे भी अहम भूमिका निभा सकते हैं। आइए जानते हैं कि कैसे आप पैरेंट्स बनने के बाद ज्यादा से ज्यादा टैक्स में छूट का लाभ पा सकते हैं।

बच्चों की फीसः नर्सरी से पोस्टग्रेजुएशन तक

- नौकरी पेशा वाले टैक्सपेयर्स अपने बच्चों की शिक्षा लागत में मदद करने के लिए कॉस्ट ऑफ कंपनी (सीटीसी) स्ट्रक्चर के हिस्से के रूप में आयकर अधिनियम की धारा 10(14) के तहत कुछ भत्ते के हकदार हैं। इनमें भत्तों में शिक्षा और हॉस्टल खर्च शामिल है।
- **बच्चों की शिक्षा भत्ता:** हर एक बच्चे के लिए प्रति माह 100 रुपये की कटौती, दो बच्चों के लिए अधिकतम 2,400 रुपये सालाना तक।
- **बच्चों की हॉस्टल भत्ता:** हर एक बच्चे के लिए प्रति माह 300 रुपये की कटौती, दो बच्चों के लिए अधिकतम 2,600 रुपये सालाना।

ट्यूशन फीस पर भी छूट : इसके अलावा बच्चों की शिक्षा के लिए भुगतान की गई ट्यूशन फीस इनकम टैक्स की धारा 80सी के तहत कटौती योग्य है। माता-पिता अलग से सालाना 1.5 लाख रुपये तक की कटौती का डिडक्शन क्लेम कर सकते हैं। यह टैक्स डिडक्शन भारत में स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों या अन्य शैक्षणिक संस्थानों में दो बच्चों तक के लिए भुगतान की जाने वाली ट्यूशन फीस को कवर करती है। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह कटौती ट्यूशन फीस के लिए विशिष्ट है और इसमें अन्य शुल्क शामिल नहीं हैं, जैसे कि पार्ट-टाइम या इंटरनेशनल कोर्स पाठ्यक्रमों के लिए।

सुकन्या समृद्धि योजना

धारा 80सी के तहत 1.5 लाख रुपये तक की टैक्स बेनिफिट्स के साथ-साथ टैक्स फ्री रिटर्न भी देती है। यह मुख्य रूप से बालिका शिक्षा और विवाह के लिए है क्योंकि राशि का निवेश केवल 21 वर्ष की आयु तक किया जा सकता है। सुकन्या समृद्धि अकाउंट किसी भी पोस्ट ऑफिस या बैंक शाखा में खुलवाया जा सकता है। बेटी के जन्म के समय या फिर 10 साल की उम्र तक यह खाता खुलवाया जा सकता है। खाता खुलवाने के समय कम से कम 1000 रुपये और एक वित्त वर्ष में अधिकतम 1.5 लाख रूपये जमा करवाने होते हैं।

बीमा योजना

बच्चों की शैक्षणिक भविष्य को वित्तीय सुरक्षा देने के लिए, माता-पिता को बच्चों के नाम पर बीमा योजनाओं और यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान जैसे निवेश स्कीम पर विचार करने की सलाह दी जाती है। ये उपकरण न सिर्फ टैक्स बेनिफिट देते हैं बल्कि योगदान देने वाले माता-पिता की मृत्यु जैसी अप्रत्याशित परिस्थितियों के मामले में वित्तीय सुरक्षा भी प्रदान करते हैं। यानी बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए आप पीपीएफ, सुकन्या समृद्धि खाता, म्यूचुअल फंड्स खाता, ट्रेडिशनल इंश्योरेंस पॉलिसी जैसे स्कीम की मदद ले सकते हैं। इसमें आप जो निवेश करेंगे, उस पर सेक्शन 80C के तहत डिडक्शन मिलता है।

एजूकेशन लोन

एजूकेशन लोन पर ब्याज के बिना किसी ऊपरी सीमा के धारा 80ई के तहत टैक्स डिडक्शन के लिए पात्र है। यह प्रावधान विशेष रूप से हायर इनकम वाले परिवारों के लिए फायदेमंद है और यह सुनिश्चित करता है कि वित्तीय बाधाओं के बावजूद हायर एजुकेशन का सपना पहुंच के भीतर बना रहे। बच्चे की पढ़ाई के लिए आप एजुकेशन लोन लेकर सेक्शन 80ई के तहत टैक्स बचा सकते हैं।

हेल्थ इंश्योरेंस पर

इनकम टैक्स की धारा 80डी बच्चों के लिए भुगतान किए गए हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर टैक्स डिडक्शन का लाभ देती है। हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी में बच्चे, पत्नी और खुद यानी परिवार के लिए टैक्स डिडक्शन की ऊपरी लिमिट 25,000 रुपये है। इनकम टैक्स की धारा 80डी के तहत बच्चे वाला परिवार 25,000 रुपये तक के टैक्स डिडक्शन के लिए क्लेम कर सकता है। इसके अलावा कॉम्प्रिहेंसिव हेल्थ इंश्योरेंस कवर अतिरिक्त 5,000 रुपये तक का क्लेम सुनिश्चित करता है। यह कवरेज होने पर परिवार बच्चों के प्रिवेंटिव हेल्थ चेकअप के लिए 5,000 तक की सब-लिमिट का दावा भी कर सकते हैं।

इन पर भी राहत

इसके अलावा, सेक्शन 80डीडी और 80डीडीबी विकलांग या विशिष्ट बीमारियों वाले बच्चों के मेडिकल ट्रीटमेंट पर होने वाले खर्चों के लिए टैक्स डिडक्शन मिलते हैं। धारा 80डीडी के तहत, विकलांग बच्चों के चिकित्सा उपचार और रखरखाव से संबंधित खर्चों के लिए टैक्स डिडक्शन का दावा किया जा सकता है।

खबर संक्षेप

विश्व योग दिवस में सबकी भागीदारी जरूरी

बवानीखेड़ा। हरियाणा योग आयोग एवं आयुष विभाग हरियाणा के मार्गदर्शन में जिला आयुष विभाग जिला आयुर्वेद अधिकारी डॉ. रश्मि शर्मा, जिला योग कॉर्डिनेटर डॉ. संजय वैद, योग विशेषज्ञा डॉ. निशा खट्टर, डीपीएम अर्चना श्योराण, डॉ. हरीशचन्द्र की देखरेख में विश्व योग दिवस में 75 दिवसीय योग प्रोटोकॉल कार्यक्रम समस्त जिला भिवानी की व्यायामशालाओं में योग प्रोटोकॉल शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में 10वें विश्व योग दिवस की तैयारियों के लिए व्यायामशाला दुर्जनपुर में आयुष योग सहायक गजानंद कौशिक उपस्थित योग शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

लोस चुनाव को लेकर बैठक का आयोजन

बवानीखेड़ा। लोकसभा हिसार विधानसभा बवानीखेड़ा चुनाव प्रबंधन समिति की मीटिंग हुई, जिसमें लोस प्रभारी अमरपाल राणा पहुंचे और उन्होंने कहा कि बूथ प्रमुख जीता तो चुनाव जीता। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के कार्य पूरे विश्व में गुंजायमान है व मीटिंग की अध्यक्षता लोकसभा सह संयोजक एडवोकेट धर्मवीर रतेरिया ने की। वे विधानसभा चुनाव प्रबंधन समिति के सभी सदस्यों से रूबरू हुए। रतेरिया ने कहा जो हमारी चुनाव प्रबंधन समिति 35 सदस्यों की है उसे 75 सदस्यों तक लेकर जाएंगे और सबका साथ सबका विकास की बात करेंगे।

मोबाइल फोन चोरी के मामले में आरोपी पकड़ा

हिसार। शहर थाना पुलिस ने परिजात चौक स्थित होटल से मोबाइल फोन चोरी के मामले में आरोपी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी निवासी नितिन को गिरफ्तार किया है। उप निरीक्षक शेषकरण ने ने बताया कि इस संबंध में पारिजात चौक स्थित होटल संचालक अनाजमंडी निवासी अजीत ने उसके होटल के काउंटर से मोबाइल फोन चोरी होने के बारे शिकायत दी थी। शिकायत पर छानबीन करते हुए पुलिस ने नितिन को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उससे चोरीशुदा चार मोबाइल फोन बरामद किए हैं।

बच्चा बच्चा करे पुकार, वोट डालना हर बार : शर्मा

सारे काम छोड़ दो, सबसे पहले वोट दो के संदेश से मतदान को किया जागरूक

राजकीय वमा विद्यालय पालुवास के बच्चों ने निकाली मतदान जागरूकता रैली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पालुवास के बच्चों ने पूरे गांव में मतदान जागरूकता रैली निकाली। रैली का शुभारंभ प्राचार्य राजकुमार शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर किया। बच्चों ने पूरे गांव में पोस्टर, बैनर आदि लेकर ग्रामीणों को अधिक से अधिक मतदान करने के लिए जागरूक किया। प्राचार्य शर्मा ने ग्रामीणों को मतदान का महत्व समझाया और 25 मई को मतदान बूथों पर जाकर अपना वोट डालने का आह्वान किया। इस अवसर पर बच्चों ने वोट डालने जाना है, अपना फर्ज निभाना है, सारे काम छोड़ दो, सबसे पहले वोट दो, बच्चा बच्चा करे पुकार वोट डालना हर बार, अंकल आंटी मान जाओ वोट डालने जरूर जाओ आदि नारों से ग्रामीणों को जागरूक किया। इस अवसर पर संदीप वधवा, सुरेंद्र मम्मू, संजय मुदगिल, मंजीत, कृष्ण यादव, अजीत, जोगिंदर, महाबीर, रमेश, दीपमाला, रीना, सुनीता, रत्न कौर, प्रेमलता, अरूणा, संजीता, बबीता सहित विद्यार्थी रैली में शामिल रहे।

भिवानी। मतदान जागरुकता रैली को झंडी दिखाकर रवाना करते प्राचार्य राजकुमार शर्मा। फोटो : हरिभूमि

मतदान को लेकर एसडीएम ने ली सुपरवाइजर की बैठक

तोशाम। तोशाम के एसडीएम मनोज दलाल ने लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने के लिए अपने कार्यालय पर सुपरवाईजरों की बैठक ली और उन्हें आवश्यक दिशा निर्देश दिए। एसडीएम दलाल ने कहा कि सभी सुपरवाइजर अपने-अपने स्कूलों में जागरूकता रैली व नुक्कड़ नाटक के माध्यम से बूथ स्तर के अधिकारियों को जागरूक करें तथा 85 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के बुजुर्गों व विकलांगों की सूची तैयार करें और 100 प्रतिशत मतदान के लिए प्रेरित करें और उनका सम्मान भी करें। एसडीएम ने इस कार्य में अधिकारियों की ड्यूटी भी लगाई जाएगी। उन्होंने कहा कि सभी सुपरवाइजर अपने मतदाता लिस्ट की अच्छी तरह से जांच करें और कोई कमी है तो उसे कानूनगो रामफल से संपर्क कर दुरूस्त करवाएं। कानूनगो रामफल ने प्राप्त समस्याओं का समाधान भी किया। इस अवसर पर समाजसेवी लक्ष्मण गौड़ समेत अनेक सुपरवाईजर व खंड विकास पंचायत अधिकारी उपस्थित रहे।

रैली निकाल कर ग्रामीणों को किया जागरूक

भिवानी। राजकीय वमा विद्यालय रिवासा में तोशाम से एसडीएम मनोज दलाल के आह्वान पर मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य राजेन्द्र कुमार जांगड़ा ने की। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में तोशाम बीईओ विजय कुमार सांगवान ने शिरकत की और मत के प्रयोग के बारे विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि लोकतंत्र के पर्व में हमें बढ़चढ़ कर भाग लेना चाहिए, अपने मत का सही प्रयोग कर बेहतर सरकार बनाने में अपना योगदान देना चाहिए। इस दौरान बच्चों ने चार्ट मेकिंग व स्लोगन के माध्यम से ग्रामीणों को मत का प्रयोग करने के लिए जागरूक किया। कार्यक्रम में सुपरवाइजर लक्ष्मण गौड़ व प्रवक्ता बजरंग शर्मा ने बच्चों को मतदान के प्रति जागरूक किया और कहा कि वे अपने-अपने माता-पिता को अपने मत का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें। इस दौरान नीरज वर्मा के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने मतदान जागरूकता रैली निकाली। इस अवसर पर भगतराम, धर्मबीर, पिंकी यादव, योगेन्द्र शर्मा, बजरंग शर्मा, नीरज वर्मा, पूनम, आशा, ओमपति, अजित, गुणपाल मिडल हैड, अमित, विरेन्द्र व महाबीर आदि उपस्थित रहे।

मताधिकार का प्रयोग करने को किया प्रेरित

भिवानी। जिला निर्वाचन एवं उपायुक्त नरेश नरवाल के मार्गदर्शन में शनिवार को आदर्श महिला कॉलेज में प्रिंसिपल डॉ. अलका मित्तल के मार्गदर्शन में इलेक्ट्रॉल वोटिंग सेल द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया,जिसमें चुनाव महापर्व के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में मताधिकार की महता के बारे छात्राओं को विस्तार से बताया कि लोकतंत्र के पर्व में सभी अपनी सहभागिता करें। छात्राओं को समझाया कि वे खुद भी वोट डालने जाएं और आस-पड़ोस और परिजनों को वोट डालने के लिए प्रेरित करें।

उल्लेखनीय है कि लोकसभा चुनाव में जिले में अधिक से अधिक मतदान प्रतिशत को लेकर जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त नरवाल के निर्देशानुसार जिले में स्वीप अभियान चलाया गया है। स्वीप अभियान के तहत गांवों में नागरिकों को मताधिकार का प्रयोग करने के लिए जागरूक किया जा रहा है, वहीं शिक्षण संस्थानों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं। विद्यार्थियों को अपने मत का प्रयोग करने के लिए शपथ दिलाई जा रही है। युवाओं को वोट के महत्व की जानकारी दी जा रही है। युवाओं को लोकतंत्र की मजबूती के लिए मताधिकार का प्रयोग करने का आह्वान किया जा रहा हैं। कार्यक्रम में डॉ. ममता वाधवा ने छात्राओं को चुनाव में वोट डालने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि एक वोट से सरकार बनती हैं और गिर भी जाती है। अमेरिका का उदाहरण देते हुए बताया कि एक वोट की वजह से जर्मनी को अमेरिका नेशनल भाषा नहीं बनाकर अंग्रेजी भाषा बनाया और भी कई उदाहरण प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में 60 बच्चों ने भाग लिया और व्याख्यान को सुना।

मित्ताथल स्कूल के बच्चों ने नशे के खिलाफ निकाली जागरूकता रैली

भिवानी। वीर शहीद सुरेश कुमार राजकीय वमा विद्यालय मित्ताथल के बच्चों ने प्राचार्या राजरानी के नेतृत्व में गांव में नशे के खिलाफ जागरूकता रैली निकाली तथा गुटखा, खैनी व पान का ऐसा चला रिवाज-खाते अंधाधुंध सब दूषित हुआ समाज। परिवार पर अपने दो सब ध्यान, नशे की लत का करो समाधान। कुछ पल का नशा सारी उम्र की सजा आदि नारों के साथ बच्चों ने ग्रामीणों को जागरूक किया। रैली को स्कूल प्राचार्या राजरानी ने रवाना किया। रैली अध्यापिका कृष्णा सिवाच, दीपिका, अनिता कायत, अनिता तंवर, प्राईमरी हेड कृष्णा, मंजू के मार्गदर्शन में गांव की गलियों से होते हुए वापस स्कूल प्रांगण में पहुंची। प्राचार्या ने कहा कि नशा हमें आर्थिक, शारीरिक व सामाजिक रूप से बर्बाद करता है, इससे हमें बचना चाहिए । उन्होंने युवाओं से आहवान किया कि वे देश का भविष्य हैं, उन्हें नशे से दूर रहना चाहिए। नशा हमें अंदर से खोखला कर देता है, अगर युवा पीढ़ी कमजोर होगी तो देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी।

कार्यकर्ताओं के सम्मान को लेकर ही भाजपा ज्वाइन की : सांगवान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

पूर्व सहकारिता मंत्री एवं भाजपा नेता सतपाल सांगवान ने कहा कि कार्यकर्ताओं के सम्मान को लेकर ही वे भाजपा में शामिल हुए हैं। साथ ही क्षेत्र के विकास को आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हुए भविष्य की राजनीति की जाएगी। दादरी का विकास करवाना ही हमेशा प्रयास रहता है। सांगवान ने भाजपा में शामिल होने के बाद शनिवार को दादरी की अनाजमंडी में व्यापारियों द्वारा किये सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए कही।

मंडी प्रधान रामकुमार रिटोलिया की अगुवाई में व्यापारियों ने सांगवान के भाजपा में शामिल होने का स्वागत किया और उनका पूरा सहयोग व समर्थन देने का आश्वासन दिया। व्यापारियों ने कहा कि हमेशा क्षेत्र को आगे बढ़ाने की सोच रखने वाले सतपाल सांगवान

बेहतर नेता हैं। वहीं सांगवान ने व्यापारियों व कायकर्ताओं का धन्यवाद करते हुए कि कभी कार्यकर्ताओं के सम्मान को झुकने नहीं दिया जाएगा। इस अवसर पर कृष्ण मकड़ानिया, वेदपाल चरखी, मोहन मकड़ानिया, पवन सेठ आदि मौजूद रहे।

बहुजन मुक्ति पार्टी ने वर्षा को उतारा मैदान में

- सभी राजनीतिक दलों ने हमेशा एससी-बीसी वर्ग के लोगों से किया विश्वासघात : सुरेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

दिनोद गेट स्थित चेतराम प्रजापति धर्मशाला में बहुजन मुक्ति पार्टी के बैनर तले एससी-बीसी वर्ग से जुड़े विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों की बैठक हुई। बैठक के दौरान प्रदेश के गठन से लेकर आज तक एससी-बीसी वर्ग के सामाजिक व राजनीतिक उत्थान पर चर्चा हुई तथा फैसला लिया कि सभी राजनीतिक दलों के एससी-बीसी वर्ग के प्रति नजरअंदाज पूर्ण रवैये के

भिवानी। बहुजन मुक्ति पार्टी की लोस चुनाव में उम्मीदवार वर्षा का अभिनंदन करते लोग। फोटो : हरिभूमि

चलते अबकी बार लोकसभा चुनाव में बहुजन मुक्ति पार्टी से उम्मीदवार उतारा जाए, जिसके बाद विचार-विमर्श कर सर्वसम्मति से वर्षा के नाम मोहर लगी। इस फैसले का उपस्थित सभी लोगों ने एक मत से समर्थन किया। पार्टी के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेश प्रजापति एवं युवा प्रदेश अध्यक्ष उमेद सावड़ ने कहा कि बहुजन मुक्ति पार्टी की बैठक में आमजन ने स्वयं अपना उम्मीदवार चुना है, जो लोकतंत्र के सही मायनों को सार्थक करता है। विभिन्न पार्टियां बंद कमरों में बैठक कर अपना उम्मीदवार स्वयं चुनती है तथा उस उम्मीदवार को आमजन पर थौंपा जाता है, लेकिन बहुजन मुक्ति पार्टी ने ऐसा ना करके सार्वजनिक तौर पर बैठक कर आमजन के विचारों को जानकर ही वर्षा को अपना उम्मीदवार चुना है। इस मौके पर भारतीय विद्यार्थी मोर्चा, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग मोर्चा, राष्ट्रीय मूलनिवासी महिला संघ, बहुजन क्रांति मोर्चा, भारत मुक्ति मोर्चा, राष्ट्रीय बेरोजगार मोर्चा, राष्ट्रीय मूलनिवासी ऑटो चालक संघ आदि संगठनों के पदाधिकारी मौजूद रहे।

मतदाताओं को मतदान के लिए किया प्रेरित

बहल। लोकसभा चुनावों में मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करने के लिए प्रशासन अभियान चलाया जा रहा है, वहीं निजी संस्थाएं भी इसमें बढ़चढ़ कर सहयोग दे रही है। कस्बे की भालोठिया एकेडमी के प्रशिक्षण ले रहे युवाओं ने कस्बे में जागरूकता रैली निकालकर लोगों को मतदान को राष्ट्रीय पर्व मानकर हर हाल में मतदान करने के लिए प्रेरित किया। शनिवार को भालोठिया एकेडमी के मैनेजिंग डायरेक्टर एमएस भालोठिया, डायरेक्टर नवनीत भालोठिया, फैकल्टी इंचार्ज प्रियंका भालोठिया व ऑफिस सुप्रीटेंडेंट राजबीर सिंह पंवार ने प्रशिक्षाणर्थियों की रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। भालोठिया ने कहा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, चुनावों के महापर्व में लोकतंत्र की मजबूती के लिए हम सबका फर्ज है कि अपने मताधिकार का प्रयोग करें व दूसरे लोगों को मतदान के लिए प्रेरित करें।

एसयूसीआई ने रोहतास को बनाया प्रत्याशी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ने प्रेसवार्ता में बताया कि पार्टी ने रोहतास सैनी को भिवानी -महेन्द्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से अपना उम्मीदवार बनाया है।

तोशाम में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ने पार्टी उम्मीदवार रोहतास सैनी के पक्ष में चुनावी अभियान चलाने को पार्टी कार्यकर्ताओं, प्रबुद्ध नागरिकों एवं सोशल एक्टिविस्ट की सभा की। सभी की अध्यक्षता पार्टी के जिला कमेटी सदस्य मास्टर बस्तीराम ने की। संचालन पार्टी के सचिव मंडल सदस्य रामफल ने किया। पार्टी के पोलित ब्यूरो सदस्य एवं ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सत्यवान ने कहा कि कांग्रेस के कुशासन के परिणामस्वरूप सत्ता में काबिज हुई भाजपा गठबंधन सरकार की जनविरोधी नीतियों ने पिछले 10 सालों में देश की जनता के जीवन को तबाह कर दिया है। बेरोजगारी, महंगाई व भ्रष्टाचार के तमाम रिकॉर्ड तोड़ दिए। पिछले 10 वर्षों में अमीर व गरीब के बीच की खाई और चौड़ी हुई है। किसानों की कृषि जमीन को कॉरपोरेट घरानों को देने के लिए तीन काले कृषि कानून लाए गए थे। पार्टी के राज्य सचिव कामरेड राजेन्द्र सिंह ने कहा कि जो पार्टियां पूंजीपतियों से धन लेती हैं, वे कमेरे वर्ग के शोषण-दमन को बढ़ावा देती हैं। उन्होंने अफसोस के साथ कहा कि सीपीएम-सीपीआई ने कुछ सीटों के लिए कांग्रेस के 'इण्डिया' गठबंधन में शामिल होकर वामपंथ को गहरा आघात पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी 23 राज्यों में 152 लोकसभा क्षेत्रों से चुनाव लड़ रही है।

भिवानी। एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की बैठक को संबोधित करते वक्ता।

कच्चे-पक्के कर्मी एकजुट, मीटिंग में करेंगे निर्णायक आंदोलन का ऐलान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

विभिन्न विभागों के कच्चे-पक्के कर्मचारी अपनी सांझी मांगों को लेकर एकजुट हो गए है, पिछले 38 वर्षों से एसकेएस कर्मचारियों के मांग व मुद्दों के साथ-साथ जनता के मुद्दों को लेकर भी सड़कों पर रहा है। पिछले 10 वर्षों से भाजपा सरकार ने कर्मियों की मांगों का कोई समाधान नहीं किया, जिससे कर्मियों में सरकार के प्रति नाराजगी है। लोस चुनाव से पहले पूरे प्रदेशभर में सभी ब्लॉक स्तर पर कार्यकर्ता कन्वेंशन कर आंदोलन को तीखा किया गया है। उन्होंने कहा कि ब्लॉक स्तर पर कन्वेंशन व आगामी आंदोलन की रूपरेखा तैयार करने के लिए 21 अप्रैल को कर्मचारी भवन रोहतक में राज्य कमेटी की मीटिंग करने का निर्णय लिया है। राज्य कमेटी की मीटिंग में सभी चुने हुए पदाधिकारी भाग लेंगे, जिसकी अध्यक्षता प्रांतीय प्रधान धर्मबीर फौगाट करेंगे। सकसं के जिला प्रधान सूरजभान जटासरा, सचिव सहदेव रंगा, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र रोहिल्ला ने बताया कि सरकारी महकमों में बड़ी तेजी से आऊटसोसिंर्ग, ठेका प्रथा, नीजिकरण की नीतियों को बढ़ावा देकर रोजगार के अवसर समाप्त किए जा रहे हैं।

हॉस्पिटल की दीवारों पर लिखे गीता के श्लोक रोग निवारण में होंगे सहायक

प्रदेश के नसिंर्ग होम में बनेंगे जीयो गीता कॉर्नर: ज्ञानानंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जीयो गीता के संस्थापक महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञानानंद महाराज भिवानी पहुंचे। उन्होंने जीयो गीता चिकित्सक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष डॉ. विनोद अंचल के अंचल हॉस्पिटल पर जीयो गीता कॉर्नर की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि हॉस्पिटल की दीवारों पर लिखे गीता के श्लोकों का संदेश रोगियों के रोग निवारण में सहायक होगा, जिन्हें पढ़कर रोगियों व उनके परिजनों का मनोबल बढ़ेगा। इस मौके पर चिकित्सकों की बैठक भी ली। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. वीपी यादव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा राज्यसभा सदस्य कार्तिकेय शर्मा भी डॉ. अंचल के निवास पर पहुंचे। स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने कहा कि प्रदेश के सभी नसिंर्ग होम में जीयो गीता कॉर्नर बनेंगे, जिसने जीयो गीता का साहित्य रखा होगा, जिसे रोगी व रोगी के परिजन पढ़ सके। आने वाले समय में जीयो गीता मेडिकल सेल जागरूकता अभियान चलाएगा तथा रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया जायेगा। स्वामी ज्ञानानंद ने रोगियों से मुलाकात की तथा नवजात बच्ची के माता पिता को बेटी के जन्म पर डॉ. विनोद अंचल द्वारा चलाई गई अनन्या शगुन योजना के तहत बधाई दी। स्वामी ज्ञानानंद ने रोगियों से कहा कि रोग के समय वे चिंता न करें, अपना मनोबल बनाएं रखे। उन्होंने रोगी व चिकित्सक के बीच सामजस्य पैदा करने को वीडियो क्लिप से संदेश जारी किया।

अंचल हॉस्पिटल में जीयो गीता कॉर्नर का शुभारंभ करते स्वामी ज्ञानानंद ।

ये रहे मौजूद

इस दौरान वरिष्ठ सर्जन डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. आरबी गोयल, डॉ. बीएस गुप्ता, डॉ. यतिन गुप्ता, डॉ. विनोद पंवार, डॉ. एनके शर्मा, डॉ. अरुण जांगड़ा, डॉ. प्रिया, डॉ. स्नेहा, डॉ. नवीन, डॉ. प्रवीण, डॉ. राजेश शर्मा आदि मौजूद रहे।

चुनाव में हर कार्यकर्ता योगदान दें: कलकल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

भाजपा जिला कार्यालय में मंडलों की बैठक जिलाध्यक्षा डॉ. किरण कलकल की अध्यक्षता में हुई। बैठक में लोकसभा चुनावों में भाजपा प्रत्याशी की चुनाव प्रचार पर चर्चा की गई। डॉ. कलकल ने कहा कि हमें प्रदेश की सभी लोकसभा सीटों पर जीत हासिल करनी है, इसी कड़ी में भिवानी-महेन्द्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र की सीट का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रत्येक कार्यकर्ताओं को भाजपा सरकार में योजनाओं का लाभ लेने वाले लाभार्थियों के घर जाकर उन्हें पार्टी की नीतियों व योजनाओं की जानकारी दें।

हर बूथ को बनाना है मजबूत

उन्होंने कहा कि राष्ट्र की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए, विश्व पटल पर भारत की नई भूमिका के लिए हर कार्यकर्ता को मेहनत करनी है। राष्ट्र हित के लिए हर बूथ को मजबूत बनाना है। सभी साथी एकजुटता के साथ कार्य करें। सभी कार्यकर्ता आज से ही चुनाव जीतने के

लिए रणनीति के साथ कार्य करें। डॉ. किरण ने समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचने और बूथ स्तर पर मतदाताओं से जुड़ने के लिए एक अभियान चलाने पर जोर दिया।

ये रहे मौजूद

बैठक में जिला महामंत्री राष्ट्रदीप परमार, रवि गर्ग बधवानिया, संजय बंसल, केदारनाथ, जगजीत सांगवान, मुंशीराम साहू, नितेश ऐरण, विनोद फौगाट, सत्यवान, कर्णवीर सांगवान आदि मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

जमना गिरी मंदिर में हुआ जागरण व भंडारा

चरखी दादरी। नरसिंहवास गांव स्थित बाबा जमना गिरी मंदिर में जागरण व भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें दूरदराज के श्रद्धालुओं ने शिरकत की। सैकड़ों वर्ष पूर्व इसी दिन बाबा जमना गिरी ने छपार गांव के मंदिर में समाधि ली थी, उनकी स्मृति में बाबा जमना गिरी मंदिर कि नवनिर्माण के उपरांत रात्रि जागरण व भंडारे का आयोजन किया जाता है। महंत बाबा चांदी गिरी महाराज के सानिध्य में हवन के उपरांत प्रसाद वितरण कर भंडारे का शुभारंभ किया। बाबा चांदी गिरी महाराज ने बताया कि ऐसे आयोजनों से बच्चों को सनातन संस्कृति के विषय में जानने का अवसर मिलता है। इस धार्मिक कार्यक्रम अनेक गांवों के भक्त बाबा हर वर्ष भजन कीर्तन आनंद लेते हैं।

श्रीश्याम की महिमा का किया गुणगान

बहल। खाटू श्रीश्याम मंडल बहल द्वारा शुक्रवार रात्रि को आयोजित श्रीश्याम बाबा के तीसरे संकीर्तन में भजनों की रसधार बही। गायक कलाकारों ने बाबा श्याम को हारे का सहारा और कलियुग का अवतार बताते हुए श्रीश्याम महिमा का सुंदर गुणगान किया। कीर्तन में श्रीकृष्ण लीला से जुड़ी झांकियों का मनमोहक प्रदर्शन किया। सूरजगढ़ से आए बाबा के भक्तों ने उपस्थितों को बाबा को हर वर्ष चढ़ने वाले सूरजगढ़ के निशान की जानकारी दी। कलाकारों ने श्रीश्याम बाबा के पराक्रम, त्याग व अपने भक्तों के प्रति अपार स्नेह का गुणगान किया। कलाकार संदीप राजस्थानी ने छोटो सो बालक हट कर ग्यो, सवामणी को लाडू चट कर ग्यो व लाल लंगोटो हाथ में सोटो थारी जय हो पवन कुमार सुनाकर हनुमान जी की महिमा का गुणगान किया।

कला का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान : डॉ. गोयल

निबंध लेखन में कोमल और कविता पाठ में ललिता प्रथम

वैश्य महाविद्यालय में कॉलेज स्तरीय विधिक साक्षरता सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

कला का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है, सांस्कृतिक गतिविधियां हमारे अंदर संवेदनशीलता पैदा कर हमारे जीवन में निखार लाती है, इनके माध्यम से हमें कानूनी जानकारियां सुगम रूप से मिलती हैं, ये विचार वैश्य महाविद्यालय की विधिक साक्षरता प्रकोष्ठ द्वारा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण एवं उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा के संयुक्त निर्देशन में कॉलेज स्तरीय विधिक साक्षरता सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए प्राचार्य डॉ. संजय गोयल ने प्रकट किए।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. गोयल के नेतृत्व एवं विधिक साक्षरता प्रकोष्ठ के संयोजक प्रोफेसर रत्नसिंह के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में निबन्ध लेखन, कविता पाठ, भाषण, स्लोगन लेखन, चित्रकला, पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन,डॉक्यूमेंट्री, वाद विवाद, क्विज व लघु नाटिका प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। प्रायियोगिताओ में डॉ. सतीश श्योराण, डॉ. अनिल तंवर, डॉ. अनिल शर्मा, डॉ. प्रोमिला सुहाग, डॉ. रीना, डॉ. इंदु तंवर व डॉ. रेखा ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

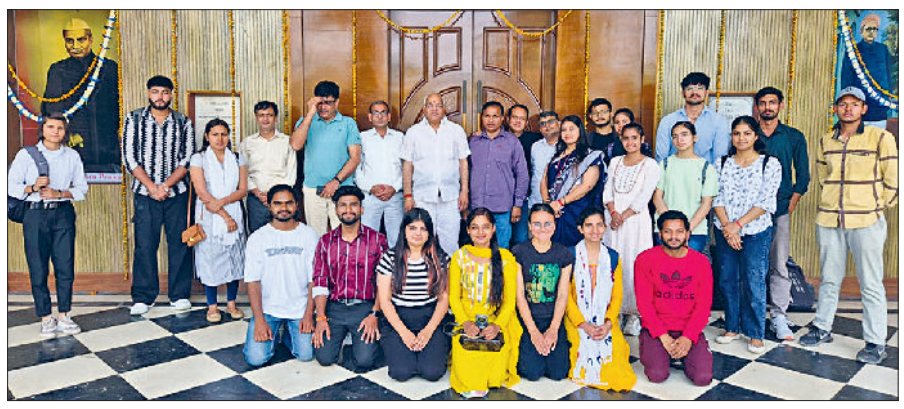

भिवानी। प्राचार्य व शिक्षकों के साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

ये रहा परिणाम

निबंध लेखन में छात्रा कोमल तंवर ने प्रथम, कर्ण प्रताप सिंह ने द्वितीय व छात्रा रिकू ने तृतीय, कविता पाठ में ललिता ने प्रथम, ऋषित ने द्वितीय व आजाद सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं भाषण में सुरभि शर्मा, कर्ण प्रताप व कोमल तंवर ने क्रमशः प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान जीता। श्लोगन लेखन में आयुष व खुशी तथा चित्रकला में खुशी और कुणाल ने प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन में बिंदु ने प्रथम, ओमप्रकाश ने द्वितीय व अंकित ने तृतीय स्थान जीता।

हिंदी सुलेख में परी व अंग्रेजी सुलेख में पावनी प्रथम

- श्रीमती उत्तमीबाई आर्य कन्या स्कूल में बाल सभा का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

श्रीमती उत्तमीबाई आर्य कन्या वमा विद्यालय में बाल सभा का आयोजन किया, जिसमें कक्षा छठी से 12वीं तक की छात्राओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। छात्राओं ने भाषण, कविता, भजन व गीत आदि के माध्यम से वातावरण को गुंजायमान कर दिया। कक्षा सातवीं की जानवी ने जिम्मेदारियों का बोझ परिवार पर पड़ा तो निकिता ने सैनिक के जीवन पर काश मेरी जिंदगी वतन के काम आए नामक कविता प्रस्तुत की। आठवीं की अमन ने कल्पना चावला पर भाषण दिया। मंच संचालन कक्षा 11वीं की नियति व यशिका ने किया। रानी लक्ष्मीबाई सदन की ओर से कक्षा छठी से आठवीं के लिए सुलेख व नौंवी से बारहवीं के लिए पोस्टर मैकिंग, पेंटिंग व ड्राइंग प्रतियोगिता आयोजित की। सुलेख में परी मित्तल प्रथम, खुशी द्वितीय व वंशिका तृतिय स्थान पर रही।

पेंटिंग बनाती छात्रा। फोटो : हरिभूमि

डॉक्यूमेंट्री में यश केजरीवाल प्रथम

डॉक्यूमेंट्री फिल्म में यश केजरीवाल प्रथम व अंकित द्वितीय रहे। वाद विवाद में कोमल तंवर, कर्ण प्रताप व नीतू सिंह ने पक्ष तथा छवि, सुरभि और संस्कृति ने विपक्ष में प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान जीता। क्विज में विनय, रूपेश व अभिषेक पहले दूसरे और तीसरे और लघु नाटिका में सूरज, यश सिंघल, अंकित, साहिल, ओमप्रकाश व वैशाली ने प्रथम स्थान पाया।

फिजिक्स एक्सप्लेंड प्रतियोगिता मे दिव्या प्रथम

भिवानी। राजीव गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय में प्राचार्य प्रोफेसर त्रिलोकचंद की अध्यक्षता में फिजिक्स एक्सप्लेंड प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता में महाविद्यालय की बहुत सी छात्राओं ने भाग लिया और चार्ट बनाकर रोजमर्रा के कामों में उपयोग होने वाले उपकरणों की फिजिक्स एक्सप्लेन की। छात्राओं ने माइक्रोवेव ओवन, करेक्टिव लेंस, एलइडी लाइट्स, क्लॉथ ड्रायर व डिहाइड्रेटर, लेजर, रेफ्रिजरेटर एलइडी टीवी, सेंसर और वाई-फाई आदि के संबंध में विस्तार से व्याख्या की। प्रतियोगिता में बीएससी तृतीय वर्ष की दिव्या प्रथम, स्नेहा द्वितीय व बीएससी द्वितीय वर्ष की उमा तृतीय स्थान पर रही। इस अवसर पर डॉ. नवनीत सिंह, प्रोफेसर अजीत, भीष्म नारायण, मुकेश, शर्मिला, प्रेमलता, अंजू, अमित व मोनू आदि उपस्थित रहे।

भिवानी। फिजिक्स एक्सप्लेंड प्रतियोगिता में चार्ट बनाकर जानकारी देती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

निबंध लेखन में जयशक्ति, श्लोगन राइटिंग में काजल प्रथम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ तोशाम

चौधरी बंसीलाल राजकीय महिला महाविद्यालय तोशाम में लीगल लिटरेसी सेल के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया। प्रतियोगिता के अंतर्गत स्लोगन लेखन, निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिताएं करवाई गई। प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। छात्राओं ने महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता जागरूकता, मानव अधिकार, घरेलू हिंसा और बाल विकास विषयों पर अपनी प्रतिभा दिखाई। कार्यवाहक प्राचार्य जयपाल शास्त्री ने छात्राओं को मानव अधिकार, बाल विकास और अन्य विषयों पर विस्तार से बताया और प्रतियोगिताओं का अवलोकन किया। निबंध लेखन प्रतियोगिता में जयशक्ति ने प्रथम,रवीना ने द्वितीय व हिमांशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। स्लोगन राइटिंग में काजल प्रथम, मंजू द्वितीय व तनु तृतीय स्थान पर रही। भाषण प्रतियोगिता में रेनू ने प्रथम, शक्ति ने द्वितीय व मंजू ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

तोशाम। निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

कविता पाठ में कक्षा दूसरी की रिंकू ने मारी बाजी

बवानीखेड़ा। कुंगड़ियां विद्या विहार वमा विद्यालय में दो पालियों में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रथम पाली में कक्षा पहली से पांचवीं तक कविता पाठ में रिंकू कक्षा द्वितीय- प्रथम, हर्षवर्धन कक्षा प्रथम से द्वितीय व आरवी कक्षा पहली से तृतीय स्थान पर रही, जबकि दूसरी पाली में कक्षा छठी से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने कविता पाठ किया, जिसमें कक्षा बारहवीं की मुस्कान प्रथम, ग्यारहवीं की काजल द्वितीय व आठवीं की तमन्ना तृतीय स्थान पर रही। प्राचार्या ज्योति अग्रवाल ने बताया कि प्रथम, द्वितीय आना बड़ी बात नहीं, भाग लेना ही उत्तम छवि होती है तथा बच्चों को उत्साहित कर कविता की बारीकी के बारे में बताया।

निबंध लेखन में प्रीति प्रथम

लोहारू। चौधरी बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ. मुकेश कुमार की अध्यक्षता में उच्चतर शिक्षा विभाग के आदेशानुसार कानूनी प्रकोष्ठ के तत्वाधान में विभिन्न विषयों पर कविता पाठ, भाषण प्रतियोगिता व निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिताओं के लिए कानूनी प्रकोष्ठ की प्रभारी डॉ. राजबाला, डॉ. राजेश व डॉ. संदीप भारद्वाज ने विद्यार्थियों को मानवाधिकार, मौलिक अधिकार दहेज, नशा मुक्ति, दिव्यांगों के अधिकार, घरेलू हिंसा महिलाओं की सुरक्षा, यौन उत्पीड़न सूचना का अधिकार, वरिष्ठ नागरिकों के अधिकार व बाल विवाह आदि विषयों पर प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया। प्राचार्य डॉ. मुकेश चहल ने कहा कि इस प्रतियोगिताएं विद्यार्थी में तार्किक समझ विकसित करती है। वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. सुखबीर सिंह, डॉ. अजय कुमार वशिष्ठ, रमेश ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम युवाओं में रचनात्मकता का विकास करते हैं। निर्णायक मंडल में डॉ. सुजीत कुमार, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. राजेंद्र सिंह, डॉ. पूनम चाहर, नीलम कुमारी व मंजू शेखावत शामिल रहे। निबंध लेखन में एमए इतिहास की प्रीति ने प्रथम, एमए इतिहास के ललित ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

निधि, गुंजन, ओंसी व युवराज बने हाउस कैप्टन

- दा ऑक्वुड स्कूल में महर्षि पाणिनि, अगस्त्य, कणाद व कात्यान सदनों का गठन
- नेतृत्व की क्षमता बढ़ा जिम्मेदारी की भावना को विकसित करती सदन व्यवस्था : भारद्वाज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

स्कूली शिक्षा में सदन व्यवस्था विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा उन्हें सामूहिक रूप से सक्रिय बनाती है। विद्यार्थियों के समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए शनिवार को दा ऑक्वुड स्कूल के सभी छात्रों को चार अलग-अलग सदनों में विभाजित कर उनके नेतृत्व विकास के लिए अलग-अलग पदाधिकारियों का चयन किया।

प्राचार्य सज्जन भारद्वाज ने बताया कि संपूर्ण व्यवस्था को महर्षि पाणिनि, अगस्त्य, कणाद व कात्यान चार सदनों का नामकरण किया गया। सभी सदनो में एक-एक अध्यापक को सदन प्रमुख तथा अध्यापकवृंद को उनके सहयोगी के रूप मे नियुक्त किया। प्रत्येक सदन से एक छात्र को हाउस कैप्टन, एक छात्र को हाउस सचिव, दो छात्रों को वंदना प्रमुख, दो छात्रों को खेलकूद प्रमुख तथा दो छात्रों को अनुशासन प्रमुख चुना गया। नवनियुक्त पदाधिकारियों ने शपथ ली कि वे ईमानदारी एवं निष्ठा से कार्य करेंगे। कणाद सदन से सदन प्रमुख के रूप में सुधा तथा सहयोगी अध्यापक पिंकी व सरिता को नियुक्त किया। हाउस कैप्टन के रूप में निधि, सचिव मीनाक्षी, वंदना प्रमुख रीतिका तथा युसूफ व अनुशासन प्रमुख सहाना व केशव को चुना गया। पाणिनी सदन से प्रमुख इंदु तथा सहयोगी महिपाल व अनिता को नियुक्त किया। छात्र युवराज को कैप्टन, पार्थ को सचिव, अनुष्का को अनुशासन प्रमुख तथा दीपांशु को खेल प्रमुख तथा मानसी व तन्वी को वंदना प्रमुख नियुक्त किया। कात्यान सदन से दिव्या शर्मा सदन प्रमुख, सहयोगी अध्यापक उर्वशी व पूजा को चुना। गुंजन सदन की कप्तान, अनुष्का सचिव, अमन व गिरिजा को अनुशासन प्रमुख तथा रियान व पीयूष को खेल प्रमुख की जिम्मेदारी सौंपी गई।

भिवानी। प्राचार्य के साथ सदनों के प्रभारी। फोटो : हरिभूमि

ऑनलाइन मीटिंग करके हेमसा ने बजाया विरोध का बिगुल

भिवानी। सभी विभागों के मिनिस्ट्रीयल स्टाफ कर्मियों ने अपने वेतनमान बढ़ोत्तरी सहित अन्य सांझी मांगों को लेकर आंदोलन का बिगुल बजा दिया है। मई माह में सभी पार्टी के लोकसभा उम्मीदवारों को ज्ञापन सौंपेंगे तथा सत्ताधारी से जवाब मांगेंगे। सर्व कर्मचारी संघ से संबंद्ध हरियाणा मिनिस्ट्रीयल स्टाफ एसोसिएशन राज्य कमेटी की ऑनलाइन मीटिंग प्रांतीय प्रधान हितेंद्र सिहाग की अध्यक्षता में हुई तथा संचालन महासचिव जगमेंद्र सिंह ने किया। सिहाग ने कहा कि भाजपा सरकार ने रीढ़ की हड्डी कहलाने वाले मिनिस्ट्रीयल स्टाफ कर्मियों से धोखा किया है। उन्होंने कहा कि मिनिस्ट्रीयल स्टाफ कर्मी पिछले दो दशक से अपनी मांगों को लेकर आंदोलनरत्त है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है। मंत्रीमंडल के फैसले, जीमाधवन आयोग की रिपोर्ट व चुनावी घोषणा पत्र को सरकार ने रद्दी की टोकरी में डालकर लाठियां बरसाई है। देशभर में लोकसभा का चुनाव है, कर्मचारी वोट की चोट करके अपना हिसाब चुकता करेंगे। वेतनमान की बात हो या पदोन्नति मिनिस्ट्रीयल स्टाफ कर्मियों का लगातार शोषण किया जा रहा है। सातवें केंद्रीय वेतन आयोग में कम से कम 16 हजार 900 और अधिकत्तम एक लाख 82 हजार रुपये वेतन निश्चित किया है। उन्होंने कहा कि गुरप डी 26 हजार तथा लिपिक 35400 का हकदार बनता है।

बवानीखेड़ा। आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस सभागार में लीगल लिटरेसी क्लब के मेंबर्स की विशेष सभा में उपस्थितजन। फोटो : हरिभूमि

विद्यार्थियों ने देश नहीं मिटने दूंगी व वोट का अधिकार पर दी प्रस्तुति

बवानीखेड़ा। गांव मिलकपुर स्थित आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस सभागार में लीगल लिटरेसी क्लब के मेंबर्स द्वारा विशेष सभा का आयोजन किया, जिसमें ईशा ने देश नहीं मिटने दूंगी कविता एवं चौरसिया व सूर्यदेव ने नशा मुक्त भारत व वोट का अधिकार विषयों पर भाषण दिए।

क्लब के इंचार्ज देवदत ने मतदान के अधिकार एवं इसके महत्व पर बच्चों को महत्वपूर्ण जानकारी दी और बताया कि भारतीय चुनाव आयोग द्वारा 85 साल से ऊपर एवं दिव्यांगों के लिए घर से ही वोट डालने की सुविधा प्रदान की गई है। उन्होंने बच्चों को नशा न करने की शपथ दिलाई और बच्चों के माध्यम से अभिभावकों को मतदान उत्सव मे भाग लेने के लिए अनुरोध किया। इस अवसर पर स्कूल अभिभावक केपी भटनागर, निर्देशक एवं वरिष्ठ समाजसेवी साहिल यादव, क्लब मेंबर स्वीटी व अनूप आदि ने भी उपस्थित जनों को पूरी गहनता से जानकारी देते हुए उन्हें मोटिवेट किया।

भिवानी। प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों का परिचय करवाते अतिथि।

अपनी रक्षा स्वयं करेंगी बेटियां

भिवानी। बैंक कॉलोनी स्थित दुर्गा स्पोर्टस एकेडमी प्रांगण में मुए थाई एसोसिएशन भिवानी द्वारा दूसरी जिला स्तरीय मुए थाई प्रतियोगिता का आयोजन किया,जिसमें बतौर मुख्यातिथि मुए थाई खेल संघ के प्रदेश महासचिव सोमबीर वशिष्ठ व उपाध्यक्ष मुकेश तवंर, विशिष्ठ अतिथि मितलेश तवंर शामिल हुए तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता मुए थाई खेल संघ के सहसचिव दीपक भाकर ने की। मुए थाई एसोसिएशन के महासचिव शुभम शर्मा ने बताया कि जिला स्तरीय मुए थाई प्रतियोगिता में लगभग 120 खिलाड़ियों ने भाग लिया, इनमें स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ी आगामी 3 से 4 मई को होने वाली दूसरी राज्यस्तरीय मुए थाई चैम्पियनशिप में भाग लेंगे और भिवानी जिले की टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। वशिष्ठ ने कहा कि मुए थाई खेल मार्शल आर्ट खेल है, जो खिलाड़ियों को अपनी सुरक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाता है। संघ के उपाध्यक्ष मुकेश तवंर ने कहा कि वर्तमान युग में बच्चों को नशे से दूर रखने का एक मात्र विकल्प खेल है। मुए थाई जैसे मार्शल आर्ट खेल में हमारी बहन बेटियों को बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहिए।

सम्मान सभ्य समाज की संरचना में न्याय के प्रहरी अधिवक्ताओं का होता अहम योगदान: गिल

बार कौंसिल के सचिव व पूर्व चेयरमैन ने 114 पुरुषों एवं पांच महिला अधिवक्ताओं को किया सम्मानित

- अधिवक्ताओं की हर मांग को पूरा करवाने में नहीं छोड़ेंगे कोई कसर : गौतम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

जिला बार सभागार में शनिवार को बार कौंसिल पंजाब एवं हरियाणा के सचिव हरगोविंद्र सिंह गिल एवं कौंसिल के पूर्व चेयरमैन रजत गौतम पहुंचे। इस मौके पर एसोसिएशन के प्रधान सत्यजीत पिलानिया ने कौंसिल के सचिव एवं पूर्व चेयरमैन का फूल-मालाओं से स्वागत व अभिनंदन किया। कार्यक्रम में बार कौंसिल पंजाब एवं हरियाणा के सचिव गिल व पूर्व चेयरमैन गौतम ने जिला बार को दो एसी, एक एलईडी, एक कंप्यूटर सैट व एक वॉटर कूलर भेंट किया। वहीं 40 वर्षो से अधिक समय से प्रैक्टिस कर रहे 114 पुरूष तथा 25 वर्ष से अधिक प्रैक्टिस कर रही पांच महिलाओं अधिवक्ताओं को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। उन्होंने पंजाब व हरियाणा की पहली महिला अधिवक्ता सावित्री देवी को सम्मानित किया। उन्होंने पैंडिंग रहे मेडिकल व डेथ क्लेम के चैक भी भेंट किए। कौंसिल के सचिव गिल ने कहा कि सभ्य समाज की संरचना में अधिवक्ताओं का अहम योगदान होता है, क्योंकि अधिवक्ताओं को न्याय का प्रहरी माना जाता है तथा वे पीड़ितों को न्याय दिलाकर कानून व्यवस्था के प्रति लोगों के विश्वास को मजबूत करते है। उन्होंने कहा कि ये भिवानी के लिए गौरव की बात है, भिवानी बार ने हाईकोर्ट को चार जस्टिस दिए है।

पूर्व चेयरमैन गौतम ने कहा कि बार कौंसिल पंजाब एवं हरियाणा द्वारा अधिवक्ताओं की हर समस्या का समाधान तत्परता से किया जाता है। उन्होंने आश्वान दिया कि वे भविष्य में भी अधिवक्ताओं की हर मांग को पूरा करवाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

भिवानी। बार कौंसिल के सचिव गिल व पूर्व चेयरमैन गौतम को स्मृति चिन्ह भेंट करते बार एसोसिएशन के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

कौंसिल भिवानी के अधिवक्ताओं की मदद को हर समय तैयार

जिला बार एसोसिएशन के प्रधान सत्यजीत पिलानिया ने बार कौंसिल पंजाब एवं हरियाणा द्वारा भिवानी के अधिवक्ताओं की सुविधा के लिए हर समय मदद करने पर आभार जताया और कहा कि वे अधिवक्ता धर्म निभाते हुए अधिवक्ताओं के साथ-साथ आमजन को न्याय दिलवाने में दिन-रात मेहनत करेंगे। इस मौके पर एसोसिएशन के सचिव दीपक तंवर व उपप्रधान रवि राय सहित अनेक अधिवक्ता मौजूद रहे।

शिक्षा संस्कार चरित्र निर्माण
कोचिंग के क्षेत्र का बड़ा नाम.....
आर्यन कोचिंग सैन्टर
'विश्वास का दूसरा नाम'
नये बैच शुरू 12th के बाद नौकरी-कॉमन बैच
CUET S.S.C.
अग्निवीर C.E.T.
रेलवे N.D.A.
अनुभवी अध्यापक नोटस पैकेज शानदार रिजल्ट
पता : पारस वाली गली (च. दादरी) नजदीक बस स्टैण्ड
9416330206, 9050035973

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 21 अप्रैल 2024

विशेषः पृथ्वी दिवस, 22 अप्रैल

हम सभी इस बात को जानते और समझते हैं कि हमारा वजूद पृथ्वी की वजह से ही संभव है। इसके बावजूद हमारी गतिविधियां धरती को लगातार संकटग्रस्त कर रही हैं। इसके दुष्प्रभाव दिखने लगे हैं और भविष्य में स्थितियां और भी भयावह हो सकती हैं। ऐसा ना हो, हमारी धरती और हम सभी सुरक्षित रहें, इसके लिए बिना देर किए हर किसी को प्रयास करने होंगे।

हमारे कारण संकटग्रस्त हो रही है
हमारी पृथ्वी

{ कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन }

जिस धरती मां ने हमें जीवन दिया, प्राणवायु दी, पीने को पानी और खाने को भोजन दिया, आज वही अपनी जीवनरक्षा के लिए जूझ रही है। हम मनुष्यों ने स्वार्थ और सुविधाओं में खोकर इसका बेतहाशा दोहन किया है, जिससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया है। हमारी लापरवाही और स्वार्थ के कारण न सिर्फ पृथ्वी का अपने मूल स्वभाव में बने रहना दूभर हो रहा है बल्कि इसकी गति और स्वाभाविक गतिविधियां भी बाधित हो रही हैं।

गति में आ रही बाधा

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि वनों की बेतहाशा कटाई, प्राकृतिक संपदा के नासमझीपूर्ण उपयोग और दोहन से धरती के सबसे ठंडे स्थान भी धीरे-धीरे गर्म होने लगे हैं। अंटार्कटिका में बर्फ पिघलने से पृथ्वी की घूर्णन गति में भी कमी आ रही है, जिससे विश्व की घड़ियां भी गड़बड़ा सकती हैं। पृथ्वी हर 23 घंटे 56 मिनट और 4 सेकेंड में अपना चक्कर पूरा करती है। इसके घूमने की गति 1674 किलोमीटर प्रति घंटा है। यह रफ्तार किसी लड़ाकू विमान जितनी है। पर पृथ्वी का आकार इतना बड़ा है कि हमें इसके घूमने का पता नहीं लग पाता। अंतरिक्ष या उपग्रहों के जरिए पृथ्वी को घूमते हुए देखा जा सकता है।

एक नए अध्ययन में पाया गया कि इसके सर्व निर्देशांकित समय (कोर्डिनेटेड यूनिवर्सल टाइम) में से एक सेकेंड कम करने की आवश्यकता पड़ सकती है। इस अध्ययन के लेखक डंकन एग्न्यू हैं। ये अमेरिका के सेंडियागो में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भू-भौतिक विज्ञानी हैं। यह अध्ययन 'नेचर' पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

नष्ट हो रहे ऑक्सीजन स्रोत

पृथ्वी पर ऑक्सीजन के मूल स्रोत पेड़-पौधे लगातार नष्ट हो रहे हैं। इसके साथ ही नदियां, समुद्र और जल संग्रह प्रदूषित और विषाक्त होते जा रहे हैं। जंगलों में आग लगने की घटनाएं दिनों- दिन बढ़ रही हैं। पिछले कई दिनों से तमिलनाडु के नीलगिरी में कुन्नूर वन क्षेत्र में जंगल की आग भड़क रही है। 1901 के बाद फरवरी 2024, दक्षिण भारत में सबसे गर्म महीना रहा है। पिछले दो महीने में दक्षिण भारत के कई राज्यों में अधिकतम, न्यूनतम और औसत तीनों ही तापमान सामान्य से ऊपर बने हुए हैं। इसी के परिणामस्वरूप सर्दियों के मौसम के दौरान भी इन वनों में शुष्क बायोमास की उपलब्धता बहुत ज्यादा है, जिसके कारण आग तेजी से फैल रही है। जंगलों में आग लगने का सबसे आम कारण मानवीय लापरवाही है। इसके अंतर्गत जलती हुई माचिस, सिगरेट के बिन बुझे टोटे को फेंकना, जंगलों में खाना पकाना, जानवरों को मारने के लिए या उन्हें डराने के लिए आग जलाना, शहद इकट्ठा करने के लिए आग लगाना आदि कारण शामिल हैं। प्राकृतिक कारणों में बिजली गिरना भी इसकी एक बड़ी वजह है। 2021 में भारत के कई राज्यों में वन अग्नि की अनेक घटनाएं देखने को मिलीं। साल 2023 में गोवा के वन क्षेत्र में बड़ी आगजनी की घटना हुई। 2024 में अब तक मिजोरम में 3738, मणिपुर में 1702, असम में 1652, मेघालय में 1252 और महाराष्ट्र में 1215 आग लगने की घटनाएं रिकॉर्ड की गईं।

बिगड़ रहा है आकार और प्रकार

पृथ्वी पर गर्मी बढ़ने से ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं। इसका असर पृथ्वी की बेस लाइन पर पड़ रहा है और इसका शेप बिगड़ रहा है। हम इतना प्रदूषण फैला रहे हैं कि 2050 तक धरती का तापमान 2 डिग्री और बढ़ जाएगा। ऐसा हुआ तो कहीं भीषण सूखा पड़ेगा तो कहीं विनाशकारी बाढ़ आएगी। ग्लेशियर पिघलकर नष्ट हो जाएंगे तो जाहिर है इसके कारण समुद्र का जल स्तर बढ़ जाएगा। बढ़े हुए जल स्तर के कारण कई शहर हमेशा के लिए डूब जाएंगे। आपको जानकर चिंता और हैरानी होगी कि धरती पर समस्त जीवित प्राणियों यानी जल, थल, नभ में रहने वाले पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों का कुल भार से, मनुष्य निर्मित चीजों जैसे इमारतों, मशीनों आदि का भार बढ़ गया है। इसका वजन 2040 तक तीन टेराटन हो जाएगा। एक टेरा टन यानी ट्रिलियन टन के बराबर होता है और 1 टन में हजार किलोग्राम होते हैं। इसी से अंदाजा लगा सकते हैं कि यह भार कितना ज्यादा होगा। प्लास्टिक का इस्तेमाल भी हम बेतहाशा करने लगे हैं। इसका दुष्परिणाम भी पृथ्वी को ही भोगना पड़ रहा है।

ऐसे बचाएं अपनी धरती

धरती मां को बचाने के लिए हम सभी को प्रण करना होगा कि अपनी धरती को बचाने के लिए कोई भी कसर नहीं छोड़ेंगे। हमें जियो और जीने दो के मूल मंत्र पर काम करना होगा। इसके लिए पशु-पक्षियों का अनावश्यक शिकार रोकना होगा। मांसाहार छोड़कर शाकाहार अपनाना होगा। प्लास्टिक का न्यूनतम उपयोग करने का निश्चय करना होगा। पेड़-पौधों का संरक्षण और संवर्द्धन करना होगा। पर्यावरण को गर्म करने वाली गैसों का उत्सर्जन रोकने के लिए हमें तरह-तरह के उपाय करने होंगे। इसके लिए हमें जीवनशैली को ईकोफ्रेंडली बनाना होगा। इसके तहत बेवजह बिजली का उपयोग यानी बर्बादी रोकनी होगी। जैविक ईंधन यानी पेट्रोल, डीजल, केरोसिन तेल की बर्बादी रोकने और इनका उपयोग न्यूनतम करने का प्रयास करना होगा। साथ ही सौर ऊर्जा के उपयोग की आदत डालनी होगी। वैज्ञानिकों को भी गैर जैव ऊर्जा का निर्माण करने की ओर प्रयास करने होंगे। हमें अपनी दैनिक आदतों में जीरो वेस्ट नीति अपनाने, पानी के दुरुपयोग को रोकने और कचरे का सही निस्तारण करने जैसी आदतें शामिल करनी होंगी। कुल मिलाकर धरती की सेहत तभी सुधरेगी, जब हम इसका अनावश्यक दोहन करने की प्रवृत्ति पर लगाम कसने में कामयाब होंगे। *

ग्लोबल वार्मिंग से बढ़ रहा आइसक्रीम का कारोबार

साल 2022 में, भारत में आइसक्रीम बाजार का आकार 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से ज्यादा था, जबकि अगले पांच सालों में 13.49 फीसदी की सालाना वृद्धि दर का अनुमान है। वैश्विक आइसक्रीम बाजार की बात करें तो साल 2018 में यह 62.4 बिलियन डॉलर था, जबकि साल 2025 तक इसके बढ़कर 97.3 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है। इन दो तथ्यों से साफ है कि जैसे-जैसे धरती के तापमान में बढ़ोत्तरी हो रही है, उसी रफ्तार से इंसान में गला तर करने वाली ठंडी चीजों की चाहत बढ़ रही है। इससे साफ है कि नए-नए स्वादों, प्रकारों के चलते क्या विकसित और क्या विकासशील, सभी देशों में आइसक्रीम की मांग बढ़ रही है। आइसक्रीम का ग्लोबल वार्मिंग के साथ महज विरोधाभासी रिश्ता भर नहीं है बल्कि सूक्ष्म स्तर पर ही इससे यह साबित होता है कि बढ़ रही गर्मी की बेचैनी ने इंसान को आइसक्रीम जैसी ठंडी चीजों की तरफ आकर्षित किया है।

जानकारों की माने तो साल 2024 आइसक्रीम के करोबार के लिहाज से बहुत हॉट होने वाला है, विशेषकर भारत में जहां आशंका है कि इस साल बाकी सालों के मुकाबले 20 से 22 दिनों तक ज्यादा गर्मी पड़ेगी। साथ ही 13 से 17 दिन तक ज्यादा लू चलेगी। ऐसी स्थिति में ठंडी-ठंडी आइसक्रीम का कारोबार बढ़ेगा ही। खासकर तब, जब आइसक्रीम के बाजार में नए से नए एक्सपेरिमेंट भी हो रहे हैं। इसके अलावा आज अपने देश के लगभग सभी बड़े शहरों में इंडियन आइसक्रीम एक्सपो आयोजित होने लगे हैं। इंडियन मैरिज बाजार के अध्ययन के मुताबिक पिछले एक दशक में शादियों में आइसक्रीम का चलन 20 फीसदी तक बढ़ा है और खान-पान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आइसक्रीम बन गई है। यह भी देखने में आ रहा है कि अब सिर्फ बच्चे ही आइसक्रीम के दीवाने नहीं हैं, अपने देश में होने वाली शादियों में 35 फीसदी से ज्यादा आइसक्रीम बूढ़े और अधेड़ खाते हैं।

डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक दोनों इस निष्कर्ष से सहमत हैं कि ग्लोबल वार्मिंग के चलते लोगों में गर्मी के एहसास की जो बेचैनी बढ़ी है, उस वजह से लोगों में मीठा और ठंडा खाने की ललक बढ़ रही है। मतलब साफ है कि जब आसमान से आग बरसेगी तो लोग खुद को तरोताजा रखने के लिए आइसक्रीम जैसी ठंडी चीजों की तरफ आकर्षित होंगे ही। -नयनतारा

महेंद्र सिंह धोनी क्रिकेट के सुपर स्टार्स में शामिल हुए हैं तो इसकी वजह है, उनकी पर्सनालिटी में शामिल कुछ विशेष गुण। इन गुणों को सीखकर आप भी अपनी फील्ड में सफल लीडर बन सकते हैं।

लीडरशिप के कई गुण हमें सिखाते हैं महेंद्र सिंह धोनी

{ मोटिवेशन / अतुल मलिकराम }

अपने क्षेत्र विशेष में किसी न किसी व्यक्ति के ऊपर लीडरशिप का जिम्मा होता ही है। मायने यह रखता है कि वह उसे निभाता किस तरह से है? इस लिहाज से सबसे पहले याद आने वाले नामों में महेंद्र सिंह धोनी का नाम भी शामिल है। धोनी की लीडरशिप क्वालिटीज के बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

उदाहरण से लीड करना : उदाहरण के तौर पर नेतृत्व करना धोनी की लीडरशिप की सबसे महत्वपूर्ण खूबियों में से एक है। धोनी के भीतर हमेशा ही अटूट समर्पण, अविश्वसनीय कार्य नीति और अत्यधिक शांत रहकर अच्छा काम करने की कला रही है। निरंतर सुधार के लिए उनकी प्रतिबद्धता और लगातार शानदार परफॉर्मेंस देने की उनकी क्षमता हमेशा ही उनके साथियों को अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरित करती है।

दृढ़ विश्वास से निर्णय लेना: सामान्य स्थिति से परे, विशेष रूप से दबाव में धोनी की निर्णय लेने की क्षमता तारीफ के काबिल है। चाहे वह एक साहसिक टीम का चयन हो, बैटिंग के ऑर्डर का एडजस्टमेंट हो या फिर एक खेल की दिशा बदलकर रख देने वाला कदम, धोनी ने हमेशा अपनी प्रवृत्ति का समर्थन किया और दृढ़ विश्वास के साथ निर्णय लिया। इस अटूट आत्म-विश्वास ने न सिर्फ उन्हें सम्मान दिलाया, बल्कि उनकी टीम में आत्मविश्वास भी जगाया। अपने फैसले पर भरोसा करना और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी साहसिक निर्णय लेना हम उनसे सीख सकते हैं।

संयम बनाए रखना: जब दबाव की अधिकता हो, ऐसी स्थिति में धोनी का शांत और संयम वाला व्यवहार सबसे अलग निखरकर आता है। उन्होंने कभी भी स्थिति की गंभीरता को खुद पर हावी नहीं होने दिया, बल्कि हमेशा ही अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए तर्कसंगत निर्णय लिया और अपनी क्षमता से सभी को चकित किया। धोनी का धैर्य हमें चुनौतीपूर्ण समय के दौरान समभाव बनाए रखना सिखाता है।

विनम्रता से काम लेना: अपनी अविश्वसनीय उपलब्धियों के बावजूद धोनी हमेशा ही जमीन से जुड़े और विनम्र बने रहते हैं। वे कभी भी अपनी सफलता का श्रेय स्वयं को नहीं देते हैं, बल्कि अपनी टीम के सामूहिक प्रयासों को देते हैं। लीडर के रूप में, हमें भी विनम्रता से काम लेना चाहिए।

अनुकूलनशीलता और नवीनता: बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने की धोनी की क्षमता और उसके अनुसार नई रणनीतियों के प्रति उनका झुकाव उन्हें अन्य सभी लीडर्स की भीड़ से अलग करता है। स्थिति को देखते हुए हमेशा नए तरीकों की तलाश में रहने वाले धोनी, नई रणनीति और तकनीकों के साथ प्रयोग करने से कभी नहीं डरते हैं। सभी लीडर्स में बदलाव को अपनाने का गुण होना चाहिए।

प्रभावी संवाद: धोनी के लीडरशिप के गुण में कम्युनिकेशन की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। उनके पास अपने विचारों को स्पष्ट रूप से और संक्षेप में यह सुनिश्चित करने की क्षमता है कि टीम का प्रत्येक सदस्य अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझे। लीडर्स को चाहिए कि वे प्रभावी कम्युनिकेशन स्किल्स विकसित करने का प्रयास करें, जिससे एक ऐसा वातावरण तैयार हो सके, जहां विचारों का स्वतंत्र रूप से प्रवाह हो और सहयोग को बढ़ावा मिले।

सुनने की क्षमता : धोनी के लीडरशिप के गुणों में से एक है शांति से टीम के सदस्यों की बात सुनने की क्षमता। वे हमेशा ही अपनी टीम के सदस्यों की राय को महत्व देते हैं, उनसे मिलने वाली प्रतिक्रिया को स्वीकार करते हैं और विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करते हुए निर्णय लेते हैं। कुशल लीडर में यह कला होनी चाहिए।

दूसरों को प्रेरित करना: धोनी के पास अपनी टीम के सदस्यों को प्रेरित करने की अनूठी क्षमता है। वे टीम को अपनी क्षमताओं में विश्वास पैदा कराने का बखूबी हुनर रखते हैं। वे अपनी टीम को चुनौतियों से पार पाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। लीडर के रूप में, हमें चाहिए कि हम अपनी टीम को हमेशा प्रेरित करने का प्रयास करें।

रोल मॉडल बनें: धोनी की लीडरशिप की विशेषता उनके रोल-मॉडल बनने संबंधित व्यवहार से भी है। वे अनुशासन और समर्पण के लिए उच्च मानक स्थापित करते हुए, अपनी टीम के सदस्यों के कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहने की ताकत रखते हैं। लीडर के रूप में, हमें भी अपने लोगों को प्रेरित करते हुए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का प्रयास करना चाहिए। *

{ कविता / डॉ. नवीन दवे मनावत }

बचाने को धरती

वन सूख रहे हैं
पेड़ तरस रहे हैं पानी को
नदियां कर रहीं विलाप
पर्वत गा रहे दुखड़ा
तुम आओ शकुंतला एक बार।
इनको सहलाने, बहलाने
सुनने को क्षणिक पीड़ा
प्रकृति के साथ एक बार फिर रिश्ता
स्थापित करो
मानव को समझाने के लिए आओ।
हे शकुंतले !
कण्व ऋषि का आश्रम
अब बन गया है
अट्टालिकाओं का शहर
हवन कुंड बन गए हैं
कारखानों की चिमनियां
मंत्र ध्वनियां बन गई हैं युद्ध
की मिसाइलें
धर्म बन गया दानव।
सीता तुम भी आओ वन में एक बार
उज्ज्वल करने वाल्मीकि आश्रम को
समता, ममता स्थापित करने को
लव-कुश तुम रोको
विनाश के अश्वमेध को
तुम्हें बुला रही हैं वहीं पेड़
की टहनियां
जिससे बने थे धनुष और बाण
करने को दमन पाप।
ओ वनपुत्रों तुम रोको
शहर की ओर
बढ़ते कदमों को, सहेजो प्रकृति को
जिसने दिया अनुपम आश्रम
रोको और टोको
रोकना-टोकना जरूरी है
बचाने को धरती
रहने को मानवता...

{ कहानी / यशोधरा भटनागर }

एलबम

पति के गुजरने के बाद वह अकेली रह रही थीं। चारों बच्चे उनसे दूर अपने-अपने जीवन में मशगूल। बच्चों के स्नेह को तरसती, यादों के सहारे जीती एक वृद्धा की मार्मिक कहानी।

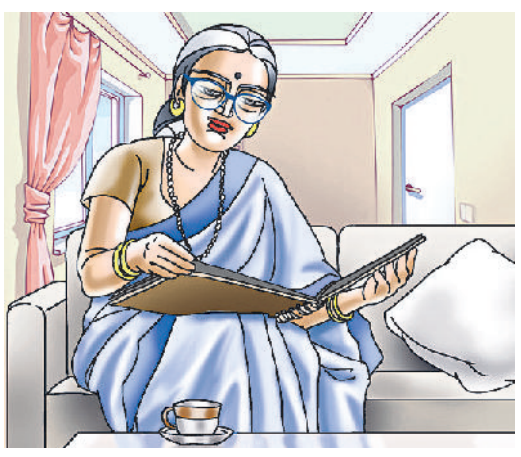

बेचैनी और घबराहट भरी खाली-खाली रात के बाद सुबह आई, अलसाई सुबह। किसी काम में मन नहीं लग रहा था। बेमन से ही अपनी दिनचर्या को निभाती हुई बगीचे में लाल गुलाब, मोगरा, हरी-हरी दूब से दो बातें करने चल दीं। जल बिंदु पुष्प पंखुड़ियों पर, हरी दूब पर दमकने लगे, हवा के हल्के से झोंके के साथ मन भी बहने लगा। कमर में खोंसा हुआ मोबाइल निकाल कर, चश्मा ठीक करके एक बार फिर देखा कि कोई फोन तो नहीं...। सामने गुलमोहर पर बुलबुल अपने बच्चों को उड़ना सिखा रही थी। वे एकटक देखने लगीं और विचारों की एक लंबी कड़ी जुड़ गई... विचार श्रंखला में उलझा मन। तभी गेट बजा, जरूर 'भूरी' होगी। तंद्रा टूटी, विचारों का ताना-बाना विच्छिन्न हो गया।

अपने सींगों से 'भूरी' गेट टनटना देती है। बिना नागा इसी समय रोटी लेने आती है यह 'भूरो', अपने भूरे रंग से गोमाता ने यह संज्ञा पा ली थी। 'भूरी' के पीछे-पीछे टॉमी भी जूली और चार बच्चों के साथ दुम हिलाते हुए पहुंच गया। सुमी रसोई घर की ओर चल दीं। रात को ही अपनी दो रोटियों के साथ भूरी और श्वान परिवार के लिए भी रोटियां बनाकर रख लेती हैं।

भूरी के सिर पर हाथ फेर, टॉमी को पुचकार वे कमरे में आराम कुर्सी पर बैठ गईं। चाय ठंडी हो गई थी, दो घूंट में गटक ली फिर मोबाइल उठाकर उसमें झांका, कोई मिस्ड कॉल तो नहीं? यूं भी कोई कॉल मिस न हो जाए, वे रात भर सोई ही कहां?

नाश्ता तो बनाना ही होगा, ब्लड प्रेशर की टेबलेट जो लेनी है। उदासीनता ओढ़े हुए, बेसन का घोल तैयार कर, तवे पर दो चीले बना लिए।

इससे जल्दी और सुगमता से शायद और कुछ नहीं बन सकता था। साथ ही अदरक वाली चाय भी चढ़ा ली। वे कभी भी चाय के बिना नाश्ता नहीं करती थीं। इसी बीच फिर मोबाइल में झांक आईं। पहले तो मोबाइल फोन अपने संग ही सहेजे रहती थीं, पर जब से बड़ी ने समझाया तो...। शायद मोबाइल खराब हो गया है...। ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि मेरे चारों बच्चों में से किसी ने भी अपनी मां को फोन न किया हो।

पति के गुजर जाने के बाद बड़े-बड़े चार कमरों वाले घर में सुमी अकेली ही रहती थीं। अड़ोसी-पड़ोसी दादी की खोज-खबर लेते रहते थे। उनके अपने सरल-मृदु स्वभाव के कारण वे मोहल्ले भर की 'दादी', 'अम्मा', आंटी बन गई थीं। उनकी अपनी बिटिया की उम्र की रेणु के लिए आंटी से मां हो गई थीं।

फिर भी अपनी संतान को क्षण भर भी नहीं बिसार पातीं, बेटियां तो पराई होती हैं, परवश हैं....। अपना घर-परिवार छोड़कर बार-बार मायके कैसे आ सकती थीं, बड़ी भी और छोटी दोनों समझाती हैं। दिन में दो-तीन बार फोन पर बात कर लेती हैं, पर यह मुआ शनिवार-इतवार काम ज्यादा होता है न, नौकरी वाली हैं दोनों। एक इतवार ही तो मिलता है, उसमें भी ढेरों काम और सब की ढेरों फरमाइश है, पूरी करने में...।

बेटे से बात की थी, आठ दिन हो गए...। खाली मन और खाली हो गया।

चाय के साथ नाश्ता गटक कर, पुरानी भूरे कवर और काले पन्नों वाली एलबम लेकर बैठ गए पहला... दूसरा... तीसरा पृष्ठ... चारों बच्चे उनके साथ उन्हें घेरे हुए बैठे थे और 'छोटी' तो गोद में ही थी, बड़ा गले में बाहें डाले खड़ा था, तुनकमिजाज 'बड़ी' दाहिनी ओर मुंह फुलाए बैठी थी। गोल-मटोल 'छोटा' बलपूर्वक मां की गोद में आने की कोशिश में थोड़ी सी जगह में ही संतुष्टि पा गया था।

एक मुस्कुराहट के साथ उन्होंने अपना चश्मा उतार कर साफ किया और निगाह झांड़ू-पोछा लगाती गुड्डो पर टिक गई, पिछले पांच बरस से यही सारा काम संभाल रही है, पर उन्होंने उसे नौकरानी कभी नहीं समझा। धीरे से बोलीं, 'बेटा मेरे साथ कॉम्प्लेक्स चल न! मेरा मोबाइल ठीक कराना है। देख न, कोई फोन ही नहीं आता इसमें...' *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

कविताओं में मुगल स्त्रियां

पवन करण की कविताओं में स्त्री जीवन के बाह्य और मनोजगत की गहन छवियां पहले भी प्रकट होती रही हैं। लेकिन उनका नया कविता संग्रह 'स्त्री मुगल' इस लिहाज से और विशिष्ट है कि यह मुगलकालीन स्त्रियों पर केंद्रित एक शोधपरक काव्यात्मक दस्तावेज के रूप में सामने आया है। इसमें अनेक ऐसी मुगलकालीन महिलाओं पर मार्मिक कविताएं हैं, जिनके बारे में आम लोग प्रायः न के बराबर जानते हैं। छोटी-छोटी कविताओं के जरिए पवन ने इतिहास में कहीं विलीन हो चुकी महिलाओं को भावनात्मक शब्दांजलि देने का प्रयास किया है। कहने की जरूरत नहीं कि कवि का यह प्रयास भी ऐतिहासिक महत्व का साबित होगा। *

पुस्तकः स्त्री मुगल(कविता संग्रह), **लेखकः** पवन करण, **मूल्यः**299 रुपए,
प्रकाशकः राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

अगर आपकी है रचनात्मक लेखन में रुचि

अगर आप अपने आस-पास की बदलती दुनिया पर नजर रखते हैं। आप हटकर सोचते हैं, आपके भीतर विवेचन और लेखन की क्षमता है, आप पत्रकारिता-लेखन के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो जुड़िए दैनिक हरिभूमि से। हमें दिल्ली में अपने फीचर विभाग के लिए आवश्यकता है-

- वरिष्ठ उप संपादक / उप संपादक
- प्रशिक्षु उप संपादक
- हिंदी टाइपिंग में कुशल ऑपरेटर भी आवेदन कर सकते हैं।

यथाशीघ्र अपना बायोडाटा मेल करें-
E-Mail: haribhoomifeaturedep@gmail.com

हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश से एक साथ प्रकाशित

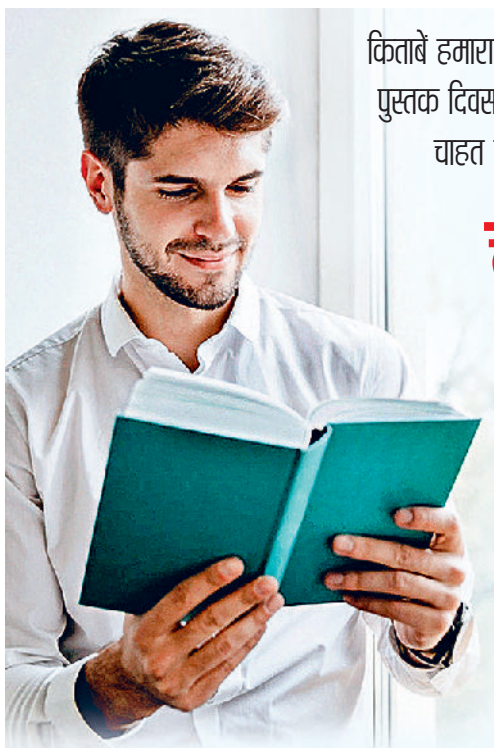

किताबें हमारा सिर्फ मनोरंजन नहीं करतीं, हमें ज्ञान नहीं देतीं बल्कि बेहतर मनुष्य होना भी सिखाती हैं। इसीलिए विश्व पुस्तक दिवस मनाया जाता है। लेकिन बीते कुछ दशकों से देश-दुनिया में लोग किताबों से दूर होते जा रहे हैं, पढ़ने की चाहत घटती जा रही है। इसकी क्या हैं वजहें, इसके दुष्परिणामों के बारे में हम सभी को पता होना चाहिए।

चलिए फिर से कर लें किताबों से दोस्ती

विशेषः विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल

लाइफस्टाइल / दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

अब से तीन दशक पहले सन 1995 में पेरिस में यूनेस्को द्वारा हर वर्ष 23 अप्रैल 'विश्व पुस्तक दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की गई। इसके पीछे का उद्देश्य ज्ञान-विज्ञान की संवाहक के रूप में पुस्तक की महत्ता के बारे में दुनिया को बताना था। अपने देश की बात करें, तो पिछली सदी में नवें दशक के पूर्वार्द्ध तक किताबें ज्ञान और मनोरंजन के क्षेत्र में अपना दखल रखती थीं। पुस्तकें हम सभी के जीवन में बहुत महत्व रखती थीं। लेकिन हाल के वर्षों में जो रीडरशिप सर्वे हुए, उससे यह तथ्य उभर कर सामने आया कि पुस्तकों के प्रति लोगों की रुचि निरंतर घटती जा रही है। बढ़ती साक्षरता दर के बीच कम होती अध्ययनशीलता, चौंकाने वाली सच्चाई है।

इसलिए बढ़ रही किताबों से दूरी

अध्ययनशीलता का विकास बचपन में ही होता है। लेकिन बाजारवाद के इस दौर में बचपन का अर्थ 'शानदार करियर के लिए संघर्ष' में सिमट गया है। इस वजह से बच्चों को विद्यालय, अभिभावक और ट्यूटरों के दबाव में अनचाहे उबाऊ पाठ्य पुस्तकों में रमना पड़ रहा है। यह स्थिति बच्चों में पुस्तकों के प्रति वितृष्णा पैदा कर देती है और वह स्वाभाविक पाठक नहीं बन पाते। यही वह 'अल्फा पीढ़ी' है, जो टीवी, मोबाइल, कंप्यूटर और इंटरनेट की दीवानी हो रही है।

किताबों का प्रभाव

वैसे इलेक्ट्रॉनिक/डिजिटल माध्यम की महत्ता से इंकार नहीं कर सकते हैं, लेकिन इनकी एक सीमा है। यह विषय के बाहरी रूप से तो परिचित करा सकते हैं, लेकिन अंतरंग का दर्शन कराने में उतना ही कमजोर हैं। इसके विपरीत किताबें हैं, जिनकी पैनी निगाह से जीवन का कोई भी रंग या आयाम अदृश्य नहीं रह पाता है। मनोविज्ञानियों का स्पष्ट मत है कि पुस्तकें सिर्फ ज्ञान और मनोरंजन का ही साधन नहीं होती हैं, बल्कि यह दिमाग चुस्त-दुरुस्त रखने का श्रेष्ठ माध्यम हैं। यह व्यक्तित्व लचीला बनाती हैं और जीने के नए-नए तरीके सिखाती हैं। दृश्य माध्यम व्यवहार के सामूहिक पक्ष को खारिज करके व्यक्तिवादी पक्ष को प्रबलित करता है। नई पीढ़ी में सामाजिक मूल्यों के प्रति घटती आस्था और स्वहित के लिए कुछ भी करने की प्रवृत्ति इसी की देन है।

विकसित हो रही दुष्प्रवृत्तियां

बच्चे, किशोर और युवा वर्ग पुस्तकों से दूर हुआ है तो इसके दुष्परिणाम भी खूब दिखने लगे हैं। किशोरों और युवाओं में हिंसा, आक्रोश, आक्रामकता, अवमानना, कामुकता जैसी प्रवृतियों की हैरतअंगेज स्तर पर वृद्धि हुई है। देश में विगत वर्षों में पुस्तक दिवस पर बुक स्टॉलों पर कुछ खास हलचल नहीं दिखती। फ्रेंडशिप-डे, वैलेंटाइन-डे जैसे मौकों पर युवावर्ग में जो उत्साह और खरीददारी की ललक दिखती है, उसका दशांश भी पुस्तक दिवस को समर्पित हो जाए तो क्या कहने!

फिर लौटें किताबों की ओर

पाठक और पठित सामग्री की एकात्मकता संस्कार निर्माण की नींव है। विद्वान विचारकों का अभिमत है कि जीवन में आस्था, विश्वास और मूल्यों की स्थापना की सशक्त स्रोत पुस्तकें ही हैं और यही रहेंगी। इसका विकल्प कोई अन्य माध्यम नहीं बन सकता। प्राचीन विचारकों ने तो यहां तक कहा है कि पुस्तक जहां रखी होती है, वह स्थान विचारों, सिद्धांतों और अवधारणाओं का संगम होता है। हमारी दिमागी क्षमता के लिए पुस्तकें उपयोगी पोषक तत्वों जैसा काम करती हैं। संभवतः इसीलिए कहा गया है कि पुस्तकें इंसान की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं। इस दृष्टि से हमारी दिनचर्या में किताबों की वापसी हमारी प्राथमिकता बननी चाहिए।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सूचना क्रांति के इस दौर और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की चकाचौंध के बीच भी शब्दों की महत्ता न घटी है और न घटेगी। क्योंकि शब्द ही हैं, जो हमें जहां हम हैं, उससे आगे निकलने की राह दिखाते हैं। शब्दों की इसी महत्ता को रेखांकित करके किताबों को पुनः जनाधार देने का उपक्रम है, 'विश्व पुस्तक दिवस।' मगर इस उद्घोषणा का महत्व तभी होगा, जब देश के पुस्तक बाजार में इसको लेकर सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखेगी।

पुस्तकों के प्रति घटती जनरुचि के संदर्भ में अकसर उसकी कीमत को दोष दिया जाता है। लेकिन तीन-चार हजार का जूता खरीदने या दोस्तों के साथ फास्ट फूड पार्टी में हजारों रुपए खर्च करने वालों को चार-पांच सौ रुपए की किताबें क्यों महंगी लगती हैं, यह समझ से परे की बात है। वास्तव में मामला महंगाई का नहीं, प्राथमिकता का है। हम महंगे उपहार देते हैं, उसमें एक-दो पुस्तकें क्यों नहीं शामिल की जा सकती हैं? यह महत्वपूर्ण आयोजन तब तक अर्थहीन है, जब तक हम पुस्तकों की तरफ नहीं लौटेंगे। अगर हम संकल्प लें कि रोज कुछ न कुछ पढ़ना है तो इससे बच्चे और किशोर भी प्रेरित होंगे। एक बार यह सिलसिला चल निकलने की देर है, फिर किताबें अपना पुराना मुकाम प्राप्त कर लेंगी। *

ऐसे पड़ी पुस्तक दिवस की नींव

पश्चिमी देशों में पुस्तकें पढ़ने का चलन पिछली सदी में काफी पहले से कम होने लगा था। वहां नवें दशक तक आते-आते युवा वर्ग के व्यवहार में कई तरह के नकारात्मक परिवर्तन दिखने लगे थे। शिक्षाविदों और समाजशास्त्रियों के दबाव में कई सर्वेक्षण हुए, जिससे पता चला कि नई पीढ़ी में किताब पढ़ने की आदत एकदम कम हो गई थी। ज्ञान और मनोरंजन के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बढ़त बना चुके थे। इसलिए उनके व्यावहारिक जीवन में संवेदना, आत्मनियंत्रण और धैर्य का स्तर काफी कम हो गया था। सर्वेक्षणों से यह निष्कर्ष भी निकला कि जो किशोर साहित्य नहीं पढ़ते, कंप्यूटर खेलों और छोटे पर्दे के साथ अपना समय निकाल देते हैं, वे संवेदना, सौंदर्यबोध और कल्पना के मामले में कमजोर हो जाते हैं। एक तरफ युवा वर्ग में मूल्यों का संकट बढ़ रहा था तो दूसरी ओर पुस्तकों के अस्तित्व पर खतरे के बादल मंडरा रहे थे। इस बात से चिंतित स्पेन की सरकार ने किताबों के पक्ष में सकारात्मक माहौल बनाने की दृष्टि से 'यूनेस्को' को एक प्रस्ताव भेजा। इसके पूर्व 'अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक संघ' भी पुस्तकों के घटते जनाधार को संभालने के लिए यूनेस्को को आगे लाने का प्रयास कर चुका था। परिणामस्वरूप विचार-विमर्श के बाद विलियम शेक्सपियर और स्पेन के लोकप्रिय लेखक मीगुयेल डी सर्वेंटाइन की पुण्यतिथि 23 अप्रैल को प्रतिवर्ष 'विश्व पुस्तक दिवस' के रूप में मनाने का फैसला लिया गया।

सीख लें कुछ नया संवर उठेगा जीवन

अनेक अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि नई-नई स्किल सीखने से जीवन में नयापन, सकारात्मकता आती है और सफलता की नई राह खुलती है। 21 अप्रैल विश्व नवाचार और रचनात्मकता दिवस पर हम बता रहे हैं, नई स्किल सीखने के फायदे।

सेल्फ इंप्रूवमेंट

अंजू जैन

नयापन हर किसी को भाता है। इसकी वजह है कि हम सब दैनिक उपयोग की पुरानी चीजों, पुराने कपड़ों, पुराने फैशन और पुराने रूटीन से कई बार ऊब जाते हैं और जिंदगी में कुछ नयापन चाहते हैं। नवाचार और रचनात्मकता हमें उत्साह और ऊर्जा तो देती ही है, हमें इनसे आंतरिक खुशी, आत्मविश्वास और जीवन में नई सफलताएं भी मिलती हैं। आप भी चाहें तो कोई नई स्किल सीखकर जिंदगी में नई ताजगी ला सकते हैं, नई राह खोल सकते हैं।

वाद्य यंत्र बजाना

दुनिया में कई शोध हो चुके हैं, जिनके नतीजे बताते हैं कि वाद्य यंत्र बजाने से मनोरंजन के साथ-साथ बौद्धिक क्षमता भी बढ़ती है। मनोवैज्ञानिक और व्यवहार विशेषज्ञ कहते हैं, वाद्य यंत्र सुनने से ही नहीं बजाने से भी मन को सुकून मिलता है। इससे अवसाद, तनाव और उदासी से भी मुक्ति मिलती है। साथ ही जो विद्यार्थी वाद्य यंत्र बजाते हैं या सुनते हैं उनकी मेमोरी शार्प होती है और पढ़ाई-लिखाई में एकाग्रता भी बढ़ती है।

नई भाषा सीखना

आज दुनिया एक ग्लोबल विलेज बन चुकी है। इंटरनेट के जरिए या फिर वास्तविक रूप में भी दुनिया के विभिन्न हिस्सों तक हमारी पहुंच आसान हो चुकी है। हम विदेशों में अपने दोस्त बना रहे हैं, पर्यटन करने या पढ़ने के लिए विदेश जा रहे हैं और विदेश से व्यापार भी खूब हो रहा है। ऐसे में विदेशी भाषा सीखना बेहद फायदेमंद होगा। मनोविज्ञानियों का कहना है कि एक से ज्यादा भाषा सीखने वालों की बौद्धिक क्षमता, याददाश्त और एकाग्रता का स्तर बढ़ जाता है। साथ ही यह एक अतिरिक्त योग्यता भी होगी और विदेश में स्टडी या जॉब भी आसान बनाएगी।

स्पीड रीडिंग

हो सकता है, आप सोच रहे हों कि रीडिंग भी भला सीखने की चीज है? लेकिन स्पीड रीडिंग वाकई एक उपयोगी स्किल है। इसमें आप जल्दी-जल्दी पढ़ना और पढ़े हुए को आत्मसात करना सीखते हैं। इससे आपका समय बचता है और आप कम समय में ज्यादा पढ़ सकते हैं। जाहिर है, इससे छात्रों को स्टडी में काफी फायदा होगा। इस कला में आप किसी लेख, कहानी या टेक्स्ट के बिंदु बनाने और उसे संक्षेप में लिखकर या चंद वाक्यांशों में लिखकर याद करने की कला भी सीख सकते हैं।

आर्ट ऑफ जगलिंग

आपने किसी सर्कस या टीवी शो में जोकर को एक साथ कई गेंदों को ऊपर उछाल कर दोनों हाथों से एक-एक कर पकड़ना और फिर से उछालने का कमाल देखा होगा। यह कला जगलिंग कहलाती है। जगलिंग सीखने और इसका अभ्यास करने से बौद्धिक क्षमता और एकाग्रता बढ़ती है।

कुकिंग आर्ट

उम्र का बंधन किसी भी स्किल को सीखने के लिए नहीं होता है। आज की तारीख में दुनिया में कई बुजुर्ग ही नहीं बच्चे भी लजीज व्यंजन न सिर्फ पका रहे हैं बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सिखाकर सेलिब्रिटी शेफ जैसा दर्जा पा चुके हैं। हेल्दी और सेफ कुकिंग एक कला है, जो आपको डिसिप्लींड और ऑर्गेनाइज्ड रहना सिखाती है। साथ ही आपको टीमवर्क, माइंडफुलनेस प्लानिंग और हेल्थ कॉन्शस होना भी सिखाती है।

डिजिटल स्किल

दुनिया पूरी तरह डिजिटल हो चुकी है। कम्युनिकेशन, पढ़ाई, लिखाई, काम-काज, पेमेंट लेना या देना या शॉपिंग लगभग सब कुछ डिजिटल हो चुका है। जाहिर है, आज की दुनिया में आपको एक समझदार और सजग नागरिक बनना हो या करियर की राह पर सफल होना हो तो आपकी डिजिटल स्किल का लेवल बढ़िया होना चाहिए। संभव हो तो आपको कोडिंग भी सीखनी चाहिए। इससे आपकी टेक्नोलॉजी की समझ बढ़ेगी और प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल भी इंप्रूव होगी। *

बहुत मुश्किल नहीं डर को हराना

किसी न किसी चीज या स्थिति से डर तो सबको लगता है। लेकिन कुछ मनोवैज्ञानिक तरीकों से अपने डर को हराया जा सकता है। यकीन मानिए, ऐसा करना बहुत कठिन भी नहीं है।

साइकोलॉजी / विवेक कुमार

डर कितना ही बड़ा क्यों न हो, उस पर जीत पाई जा सकती है, बस उसके लिए हमें कुछ मनोवैज्ञानिक तौर-तरीकों से गुजरना होता है। वैसे डर को लेकर समाज में बहुत गलत धारणाएं फैली हुई हैं। आमतौर पर लोगों का मनोविज्ञान यह है कि डरपोक लोगों को डर ज्यादा लगता है और बहादुर लोग डरते नहीं। यह सही बात नहीं है। डर एक जन्मजात और शरीर की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। इसका हमारे हिम्मती या गैरहिम्मती होने से कोई लेना-देना नहीं होता बल्कि अगर कोई व्यक्ति डरता है तो इसका मतलब यह है कि उसके शरीर में स्वाभाविक प्रतिक्रिया हो रही है। लेकिन जैसे हर चीज की एक सीमा होती है, डर की भी एक सीमा होती है। अगर डर उस सीमा के आगे बढ़ जाए तो वह डर नहीं रहता। इसलिए सीमा से आगे बढ़ा हुआ डर नुकसानदायक होता है और उसके निवारण की जरूरत होती है।

संभव है डर से छुटकाराः जब भी डर के बारे में सोचें तो यह मानकर चलें कि डर कितना ही बड़ा और जटिल क्यों न हो, उससे छुटकारा पाना संभव है। हम सब बचपन में अंधेरे से डरते हैं, कॉकरोच से या छिपकली से डरते हैं। ऊंचाई से भी डरते हैं और ये सिर्फ बच्चों की बात नहीं है, बड़े होने पर भी बहुत लोग इन सब चीजों से डरते हैं। लेकिन अगर इन सभी चीजों को धीरे-धीरे प्रैक्टिस से समझें तो डर दूर हो जाता है। दरअसल, डर से हमारी मुलाकात जन्म लेते ही हो जाती है। पैदा होने के बाद से ही किसी भी शिशु में असुरक्षा की भावना आ जाती है। भूख लगने पर वह जोर-जोर से रोने लगता है। रोना दरअसल, उसकी असुरक्षा की अभिव्यक्ति है। इसलिए जब भी उसे भूख लगती है, वह रोने लगता है। लेकिन पेट भरा होने पर नहीं रोता। ऐसे ही बिस्तर गीला हो जाने पर भी रोता है, लेकिन गीले बिस्तर से मां उठा ले तो वह चुप हो जाता है। यानी, हम जैसे ही अपने सुरक्षातंत्र में पहुंच जाते हैं, भय खत्म हो जाता है।

ऐसे मिलेगी भय से मुक्तिः किसी भी डर से छुटकारा वैज्ञानिक तरीके की परवरिश से ही मिलती है। जैसे हम अंधेरे में डरते और अंधेर में उजाला हो जाए तो डर दूर हो जाता है। ठीक इसी तरह हमारा कमजोर दिल-दिमाग जिन सवालों के जवाब नहीं ढूढ़ पाता है, उससे हमें डर लगता है। इसमें मां-बाप की भी भूमिका होती है। अकसर मां-बाप छोटे बच्चों को शरारत न करने के लिए छोटी-छोटी बातों से डराते रहते हैं। जैसे-बाबा आएगा और झोली में डालकर ले जाएगा। छोटे बच्चे इस वजह से किसी भी अंजान व्यक्ति को देखते ही डर जाते हैं। लेकिन बड़े होने पर पता चलता है कि उनका डर बेबुनियाद था। इसलिए बच्चों की परवरिश में ऐसी झूठी बातों के इस्तेमाल से बचना चाहिए।

अधिकांश होता है भविष्य का डर : डर आमतौर पर भविष्य से जुड़ा होता है। मैं लिफ्ट में जाऊंगा तो कहीं फंस ना जाऊं। मैं मीटिंग में सबके सामने बोलूंगा तो कहीं गलती तो नहीं हो जाएगी, लोग मुझ पर हंसेंगे तो नहीं। ये ऐसे डर हैं, जो आमतौर पर हम सबको लगते हैं और हम इनके बारे में सोच-सोचकर डरते रहते हैं। अगर हमारे मन में किसी तरह के संक्रमण की आशंका बैठ जाए, तो एक छींक आते ही हम बहुत डर जाते हैं, लगता है हमें इस संक्रमण ने जकड़ लिया। इंटरव्यू देने जाते वक्त हम इसलिए डर जाते हैं कि हमारे मन में ऐसे सवालों की चेन चलती रहती है, जो सवाल अभी तक हमसे न तो पूछ गए हैं और हो सकता कभी न पूछे जाएं। खुद ही हम इंटरव्यू देने जाने के समय डर जाते हैं। हम या तो बिना किसी वजह के डरते हैं या राई का पहाड़ बना लेते हैं। अगर हमारे मन में यह भाव मजबूती से बैठा हो कि जब कोई बात सामने आएगी, तब देखी जाएगी, तो हमें भविष्य से कभी डर ही नहीं लगेगा।

डर की कल्पना से बचें: मन बहुत कल्पनाशील होता है, इसलिए मामूली चीजें भी कई बार बहुत बड़ी समस्या बन जाती हैं। खतरा न होते हुए भी खतरे की घंटी सुनाई पड़ने लगती है। तभी तो मन रस्सी को कल्पना करते ही सांप समझ लेता है। दूसरी तरफ जो कल्पना से नहीं डरता, जिसमें डरावनी भावनाएं नहीं होतीं वो डरावनी परिस्थिति का भी जमकर मुकाबला करता है। मतलब यह कि डर जितना होता है, उससे कहीं ज्यादा हमारी कल्पना से बढ़ जाता है। इसलिए डर की कल्पना से बचना चाहिए। *

खास मुलाकात

पूजा सामंत

अपने दौर की स्टार हीरोइन मीनाक्षी शेषाद्रि, शादी बाद अमेरिका में सेटल हो गई थीं। वह सत्ताइस साल बाद भारत लौटी हैं, फिर से फिल्मों में काम करेंगी। मीनाक्षी अब किस तरह के रोल करना चाहेंगी? फिल्म इंडस्ट्री में वह क्या बदलाव देख रही हैं? क्या वह ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी काम करना पसंद करेंगी? मीनाक्षी शेषाद्रि से बहुत खुलकर बातचीत।

मैं ऐसे किरदार करना चाहूंगी, जो मुझे एक अलग पहचान दे : मीनाक्षी शेषाद्रि

मीनाक्षी शेषाद्रि ने मनोज कुमार निर्मित फिल्म 'पेंटर बाबू' से 1983 में फिल्मों में कदम रखा था। उसी वर्ष मीनाक्षी की जैकी श्रॉफ के साथ निर्माता-निर्देशक सुभाष घई की फिल्म 'हीरो' रिलीज हुई थी। इस फिल्म ने मीनाक्षी और जैकी को रातों-रात स्टार बना दिया। इसके बाद मीनाक्षी ने कई सुपरहिट फिल्में दीं। उन्होंने अमिताभ बच्चन, धर्मेंद्र, जितेंद्र, ऋषि कपूर, गोविंदा, विनोद खन्ना, राजेश खन्ना, शत्रुघ्न सिन्हा जैसे नामी स्टार्स के साथ काम किया। 1995 में मीनाक्षी ने इंवेस्टमेंट बैंकर हरीश मैसूरे के साथ विवाह कर लिया और उनके साथ अमेरिका में सेटल हो गईं। सत्ताइस वर्षों बाद वह भारत लौटी हैं। उन्होंने एक फिल्म साइन की है। पेश है मीनाक्षी शेषाद्रि से हुई बातचीत के प्रमुख अंश-

आपकी शुरुआती दो फिल्मों ने रिलीज के चालीस वर्ष पूरे कर लिए हैं। विवाह के बाद आप अमेरिका में सेटल हुईं। आपकी बॉलीवुड में वापसी पूरे सत्ताइस वर्षों के बाद हो रही है। अपने कमबैक को लेकर आप क्या कहेंगी?

हां, 'पेंटर बाबू' और 'हीरो' मेरी ये दोनों फिल्में 1983 में रिलीज हुई थीं। इनके चार दशक पूरे होने की मुझे बहुत खुशी है। फिल्म 'हीरो' ने मुझे स्टारडम दिलाया। फिल्म 'पेंटर बाबू' मुझ जैसी न्यूकमर को लाइमलाइट में लाई। इसके बाद राजकुमार संतोषी जी की 1993 में फिल्म 'दामिनी' रिलीज हुई थी, उसके बाद 1996 में 'घातक' रिलीज हुई। मेरे करियर की ये आखिरी दो फिल्में थीं। 1995 में मेरी शादी हुई फिर मैं अपने वैवाहिक जीवन में बिजी हो गई। बेटी केंद्रा, जो इस वक्त पचीस वर्ष की है, पढ़-लिखकर जॉब कर रही है। बेटा जोश इक्कीस वर्ष का है। उसने अपनी पढ़ाई अभी-अभी पूरी की है। कुल मिलाकर एक मां, एक पत्नी और गृहिणी के रूप में मैंने अपना दायित्व संतोषजनक ढंग से निभाया। जब मैं विवाह के बाद अमेरिका गई तो यह बात मेरे जेहन में हमेशा रही कि उम्र के किसी भी पड़ाव पर मैं अपने देश लौटकर अभिनय करना चाहूंगी। अभिनय मेरा पैशन है। यह पैशन अब पूरा करना चाहूंगी। हालांकि अपने परिवार को अमेरिका छोड़कर भारत आने का डिसीजन मेरे लिए आसान नहीं था। मैंने यह बहुत बड़ा कदम उठाया है। अब यहां मुंबई आई हूं तो परिवार को बेहद मिस भी करती हूं। देर रात मैं अपने बच्चों और परिवार से बात करती हूं।

अब आप फिल्मों में किस तरह के रोल करना चाहेंगी?

मैं किस तरह के किरदार निभाना चाहूंगी, यह अभी तय नहीं किया है। मैंने एक प्रोजेक्ट साइन कर लिया है, उसके बारे में अभी कुछ बता नहीं सकती। बहुत जल्द इसकी अनाउंसमेंट होगी। अब फिल्म इंडस्ट्री बहुत बदल चुकी है। फिल्मों की कहानियां और किरदार भी बहुत बदल चुके हैं। मैं ऐसे किरदार करना चाहूंगी, जो मुझे एक अलग पहचान दे। मुझे अहसास हो कि मेरा कमबैक खास है, फ्रूटफुल है। मैंने यहां काम करने के लिए खुद को सरेंडर कर दिया है। अभी तो मैं कोरी स्लेट हूं। देखते हैं, फिल्म मेकर्स मुझे किस तरह के किरदार ऑफर करते हैं। आज की एक्ट्रेसेस फिल्मों में महज शो पीस नहीं बनतीं, उनके लिए स्ट्रॉन्ग रोल लिखे जाते हैं, फिर चाहे वो फिल्म, टीवी हो या ओटीटी प्लेटफॉर्म।

आप सत्ताइस साल बाद भारत लौटी हैं। इंडस्ट्री में आप किन बदलावों को महसूस कर रही हैं?

सबसे बड़ा और सुखद बदलाव सेट पर वैनिटी वैन का मौजूद होना है। मेरे दौर में वैनिटी वैन नहीं होती थी। धूप, धूल में शूटिंग के बाद ड्रेस चेंज करने की कोई प्रॉपर जगह नहीं रहती थी। बड़े नामी स्टूडियोज के मेकअप रूम गंदे रहते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। इस दौर की अभिनेत्रियों के लिए बहुत बड़ी सुविधा है वैनिटी वैन। स्टार के पेमेंट का स्तर भी बढ़ा है। इस तरह फिल्म इंडस्ट्री का पूरा ढांचा ही बदल गया है।

ओटीटी इस वक्त फिल्मों के लिए टफ कॉम्पिटिशन बन चुका है। आप कितनी तैयार हैं ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए, जहां नेगेटिव रोल और स्टोरीज ट्रेंडिंग हैं?

आय एम हियर टू सरप्राइज एवरीवन! मैं नेगेटिव रोल करूंगी या नहीं, यह तो रोल पर डिपेंड करेगा, अभी से कैसे बताऊं? पॉजिटिव, नेगेटिव का कॉम्बिनेशन कर सकती हूं। ग्रे शेड्स वाले रोल भी सोच सकती हूं।

आपने बॉलीवुड के कई बड़े स्टार्स के साथ काम किया, उनके साथ आपके फिल्म करने के एक्सपीरियंस कैसे रहे?

हर एक्टर के साथ मेमोरीज शेयर करने के लिए शायद एक इंटरव्यू कम पड़ जाएगा। हां, जिनके साथ मेरी बहुत बनी, वो थे विनोद खन्ना। जब वह शिखर पर थे, सब कुछ छोड़कर आचार्य रजनीश के आश्रम में चले गए, कुछ वक्त बाद वो वापस भी आए। इंडस्ट्री ने उनका स्वागत किया। उनकी वापसी के समय मुझे उनके साथ पांच-छह फिल्में करने का मौका मिला। रजनीश आश्रम से लौटे विनोद जी के पास इतना आध्यात्मिक ज्ञान हो चुका था कि उनसे बातचीत करना एक ग्रेट एक्सपीरियंस होता था। जब मेरी शूटिंग विनोद जी के साथ होती थी। मेरे पापा भी मेरे साथ आते थे, खासतौर पर उनकी आध्यात्मिक बातें सुनने। विनोद जी, मैं और पापा घंटों बतियाते थे। उनसे हमारी बहुत अच्छी मित्रता थी। गोविंदा, इंडस्ट्री के वो सितारे हैं, जो वर्सेटाइल हैं। उनसे भी हमारा बहुत प्यारा रिश्ता रहा। ऋषि कपूर जी के साथ भी मैंने पांच फिल्में कीं। वह बहुत दिलचस्प इंसान और कमाल के एक्टर थे। आज जब मैं रणबीर को देखती हूं, मुझे लगता है उनमें अपने पिता की पूरी झलक है, लेकिन पिता पुत्र में तुलना नहीं होनी चाहिए। *

भारत और अमेरिका की लिविंग स्टाइल में अंतर

यूएसए की लिविंग स्टाइल चकाचौंध भरी है। डॉलर्स में मिलने वाली सैलरी से वहां के लोगों का स्टैंडर्ड ऑफ लिविंग हाई है। वहां की लेडीज काफी फैशनेबल हैं। लगता है मानो अभी-अभी ब्यूटी पार्लर-सैलून से निकली हों। फैशन, हाई स्टैंडर्ड ऑफ लाइफ वहां एक कॉमन बात है। हां, अमेरिका में रहने का मेरे लिए फायदा यह रहा कि मैंने वहां काफी कुछ जाना-सीखा, जो मैं भारत में नहीं कर पाई थी। यहां तो मैंने फिल्मों में बतौर अभिनेत्री काम किया, जहां मेकअप, हेयर स्टाइल, डांस सिखाने के लिए सेट पर लोग होते हैं। कोई सीन कैसे किया जाए, यह बताने वाला डायरेक्टर होता है। घर पर मां-पिताजी होते हैं, जिस वजह से मैं पैंपर्ड होती रही। अमेरिका में जाने के बाद अपने परिवार के लिए खाना बनाना, ड्राइविंग सीखना, अपने फाइनेंस को मैनेज करना, ये सारे काम मैंने सीखे, जो वहां के लिए जरूरी थे। मैंने वहां स्विमिंग सीखी, जो फिटनेस के लिए थेरैपी बनी, पर्सनली मेरी ग्रोथ हुई। इस तरह वहां की रूटीन लाइफ ने मुझे इंडिपेंडेंट और बहुत स्मार्ट बनाया। भारत में होती तो शायद ये सब काम नहीं सीख पाती। एक बात की कमी मैंने वहां बहुत महसूस की, वह है अपनापन। हम सबकी मदद करें, यह अपने देश की सभ्यता-संस्कृति का हिस्सा है। भारत के लोग बिना मांगे दूसरे की मदद करते हैं। अमेरिका में किसी की मदद करने का कल्चर नहीं है। यहां तक कि वहां अपने किसी दोस्त के घर जाना है तो पहले उसकी भी अपॉइंटमेंट लेनी पड़ती है। यह सोचना पड़ता है कि कहीं उनकी प्राइवेसी में हम कोई दखलअंदाजी तो नहीं कर रहे हैं। मैं भारत में अपनी किसी भी सहेली के घर कभी भी जा सकती हूं। हक के साथ कह सकती हूं, 'चल, यार एक कप चाय पिला।' मैं अमेरिका में इंडियन लाइफस्टाइल, यहां की खुशमिजाजी, मददगार लोग बहुत मिस करती हूं।